# प्रगति

वर्ष-7, अंक-16 अक्टूबर-दिसंबर, 2025

# आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना रायबरेली

## महाप्रबंधक संदेश

आरेडिका, रायबरेली की गृह पत्रिका 'प्रगति' के दिसंबर 2025 अंक का प्रकाशन अत्यधिक हर्ष एवं गर्व का विषय है। यह पत्रिका हमारे संगठन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम एवं समर्पण के भाव को दर्शाती है।

'प्रगति' केवल पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे विचारों, रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं सांस्कृतिक चेतना का सशक्त मंच है। इस पत्रिका के माध्यम से कारखाने की कार्यगत प्रगति, नवाचार, साहित्यिक प्रतिभा तथा रचनात्मक ऊर्जा को अभिव्यक्ति मिलती है, जो संगठन की समृद्ध कार्यसंस्कृति को सुदृढ़ करती है।

मुझे यह देखकर विशेष प्रसन्नता होती है कि हमारे कार्मिक उत्साहपूर्वक लेख, कविताएँ, संस्मरण, तकनीकी आलेख एवं रचनात्मक विचारों के माध्यम से हिंदी को कार्य-व्यवहार की सशक्त भाषा बनाने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। यह सहभागिता न केवल राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन को दर्शाती है, बल्कि संगठन में भाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को भी सुदृढ़ करती है।

मैं पत्रिका के संपादक मंडल, रेलकर्मियों एवं रचनाकारो को इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि 'प्रगति' भविष्य में भी इसी उत्साह, गुणवत्ता एवं नवोन्मेष के साथ संगठन की उपलब्धियों और रचनात्मक प्रतिभा को निरंतर प्रकाशित करती रहेगी।

सभी पाठकों को मेरी शुभकामनाएँ।

**( प्रशांत कुमार मिश्रा )**
**महाप्रबंधक**

## मुख्य राजभाषा अधिकारी की कलम से...

राजभाषा हिंदी किसी दायित्व का निर्वहन मात्र नहीं, बल्कि हमारे संगठन की कार्यसंस्कृति, सोच और संवेदना की अभिव्यक्ति है। इस दृष्टि से हिंदी गृह पत्रिका का यह अंक केवल रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भाषायी चेतना और रचनात्मक सहभागिता का जीवंत दस्तावेज है। इसी भावना के साथ आरेडिका की गृह पत्रिका 'प्रगति' का दिसंबर-2025 अंक आप सभी सुधी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है । आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि 'प्रगति' पत्रिका का यह अंक आपको रुचिकर लगेगा।

रमेश चन्द्र
मुख्य राजभाषा अधिकारी

## उप मुख्य राजभाषा अधिकारी की कलम से...

कार्यालयी कार्य-व्यवहार में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु आरेडिका, रायबरेली में कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों को अधिकारियों एवं कर्मचारियों का सकारात्मक सहयोग प्राप्त होना अत्यंत उत्साहवर्धक है। मैं इस अंक के लिए लेखन एवं सहयोग प्रदान करने वाले सभी रचनाकारों का आभार व्यक्त करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आप अपनी रचनात्मक सहभागिता से हिंदी को समृद्ध करते रहेंगे।

अष्टानन्द पाठक
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

## राजभाषा अधिकारी की कलम से...

राजभाषा हिंदी की दृष्टि से पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए हम कृतसंकल्प हैं तथा आपके सुझावों और मनोभावों का हार्दिक स्वागत है। आपके सहयोग से ही पत्रिका रोचक एवं ज्ञानवर्धक बन सकती है। पत्रिका के अगले अंक के लिए अपनी रचना एवं इस पत्रिका को बेहतर बनाने हेतु अपने सुझाव ईमेल द्वारा rajbhashaadhikarimcf@gmail.com पर सहर्ष प्रेषित कर सकते हैं।

राकेश रंजन
राजभाषा अधिकारी

# आधुनिक रेल डिब्बा कारख़ाना, रायबरेली

## राजभाषा कार्यान्वयन समिति

| | |
|---|---|
| अध्यक्ष : | महाप्रबंधक महोदय |
| मुख्य राजभाषा अधिकारी : | महानिरीक्षक सह प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त |
| उप मुख्य राजभाषा अधिकारी : | उप मुख्य वित्त सलाहकार (नामित सदस्य) |
| राजभाषा अधिकारी : | सहायक सचिव/गोपनीय<br>(नामित सदस्य) |
| सदस्य : | प्रधान मुख्य यांत्रिक अभियंता<br>प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी<br>प्रधान मुख्य सामग्री प्रबन्धक<br>प्रधान मुख्य चिकित्सा अधिकारी<br>प्रधान मुख्य अभियंता<br>प्रधान वित्त सलाहकार<br>प्रधान मुख्य विद्युत अभियंता<br>प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त<br>मुख्य प्रशासनिक अधिकारी |

*संरक्षक*
***प्रशांत कुमार मिश्रा***
*महाप्रबंधक*

*मुख्य संपादक*
**रमेश चन्द्र**
*मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं महानिरीक्षक-सह- प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त*

*उप मुख्य संपादक*
***अष्टानन्द पाठक***
*उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं उप विसमुलेधि*

*संपादक*
***राकेश रंजन***
*राजभाषा अधिकारी एवं सहायक सचिव (गोपनीय)*

*संपादन सहयोग*
***मोहम्मद अकरम***
*कनिष्ठ हिंदी अनुवादक*

***जितेन्द्र कुमार***
वरि. आशुलिपिक

***सौरभ कुमार***
वरि. लिपिक

आवरणः

रेलवे बोर्ड के तत्वावधान में आरेडिका, रायबरेली में अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन

## अनुक्रम


| क्र सं. | रचना | रचनाकार | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|---|
| 1 | ईस्ट इंडियन रेलवे और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम | प्रशांत कुमार मिश्रा | 4 |
| 2 | अभिव्यक्ति 'वाराणसी' | भारती मिश्रा | 18 |
| 3 | उद्यम, कौशल विकास और लोक कल्याण.. | रमेश चन्द्र | 19 |
| 4 | चला-चली श्री राम की नगरिया | अशोक कुमार गुप्ता | 22 |
| 5 | गज़ल | शबीह अहमद | 24 |
| 6 | मानव मस्तिष्क में नवाचार | जितेंद्र कुमार | 25 |
| 7 | मंच संचालक का भाव | आदित्य प्रकाश | 27 |
| 8 | छोड़ जाऊँगी जो पीछे... | प्रियंका राणा | 28 |
| 9 | अकेलापन... | शाबरा बेगम | 29 |
| 10 | तुमको दिल से नमन करता हूँ "माँ" | विनोद कुमार मौर्य | 34 |
| 11 | आरेडिका में हिंदी पखवाड़ा-2025 का आयोजन | राजभाषा विभाग | 36 |
| 12 | भाषा हिंदी है भारत की... | भावना | 42 |
| 13 | सलामत रहे "कलाम" | सीतेश कुमार शर्मा | 44 |
| 14 | व्यक्तिवादिता से बिखरते परिवार | सौरभ सचान | 48 |
| 15 | अधूरी सी है जिंदगी... | वसीम रज़ा इदरीसी | 49 |
| 16 | एक नारी... | नवल किशोर यादव | 51 |
| 17 | गरीब की कीमत | सौरभ कुमार | 52 |
| 18 | रेलवे बोर्ड के तत्वावधान में प्रतियोगिता .... | राजभाषा विभाग | 53 |
| 19 | अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिताःएक सफल आयोजन | राजभाषा विभाग | 55 |
| 20 | इतिहास का धमाका | राजेश पाल | 57 |
| 21 | जिंदगी की दौड़ | विश्वमोहन कुमार | 59 |
| 22 | जीवन की अपूर्णताओं में छिपी पूर्णता | गौतम सागर | 60 |
| 23 | पर्यावरण गीत | सुरेश कुमार | 62 |
| 24 | हमारा संविधान, हमारा स्वाभिमान | शिखा रावत | 63 |
| 25 | आरेडिका में नराकास की बैठक | राजभाषा विभाग | 67 |


संपर्कः राजभाषा विभाग
आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली

ई-मेलःrajbhashaadhikarimcf@gmail.com

नोटः पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।

**प्रशांत कुमार मिश्रा**
महाप्रबंधक, आरेडिका

# ईस्ट इंडियन रेलवे और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (शृंखला)

***(‘प्रगति’ पत्रिका के सितंबर, 2025 अंक के आगे)***

1857 के अशांत दिनों में, जब उत्तर भारत का हर कोना विद्रोह की आग में जल रहा था, रेल अधिकारी भी इस तूफ़ान से अछूते नहीं रहे। संसद द्वारा बाद में प्रकाशित घटनाओं के विवरण में **‘भरवारी टैंक पार्टी’** का वर्णन दिया गया, जिसमें इलाहाबाद के पश्चिम में लगभग चौबीस मील दूर भरवारी नाम का छोटा-सा स्थान था, जहाँ रेलवे अधिकारियों का एक बड़ा समूह घेराबंदी में फँसा हुआ था।

17 जून की दोपहर की गर्मी अपने चरम पर थी। रेलवे अधिकारी मेजर राइव्स के बंगले में इकट्ठा थे। अचानक उन्हें दूर से एक बड़ी भीड़ नज़र आई—हथियारों से लैस, उत्तेजित, और उग्र। स्थिति देखते ही सभी अधिकारियों को समझ आ गया कि अब उनका वहाँ रहना सुरक्षित नहीं है। चूँकि विकल्प कम थे, अतः अल्प समय में जल्दी-जल्दी सोचकर वे पास ही स्थित एक विशाल पानी की टंकी की छत पर चढ़ गए। यही उनकी अस्थायी शरण बनी। नीचे से भीड़ की चिल्लाहटें, धमकियाँ और गालियाँ लगातार उठती रहीं। ऊपर से धूप आग बरसा रही थी।

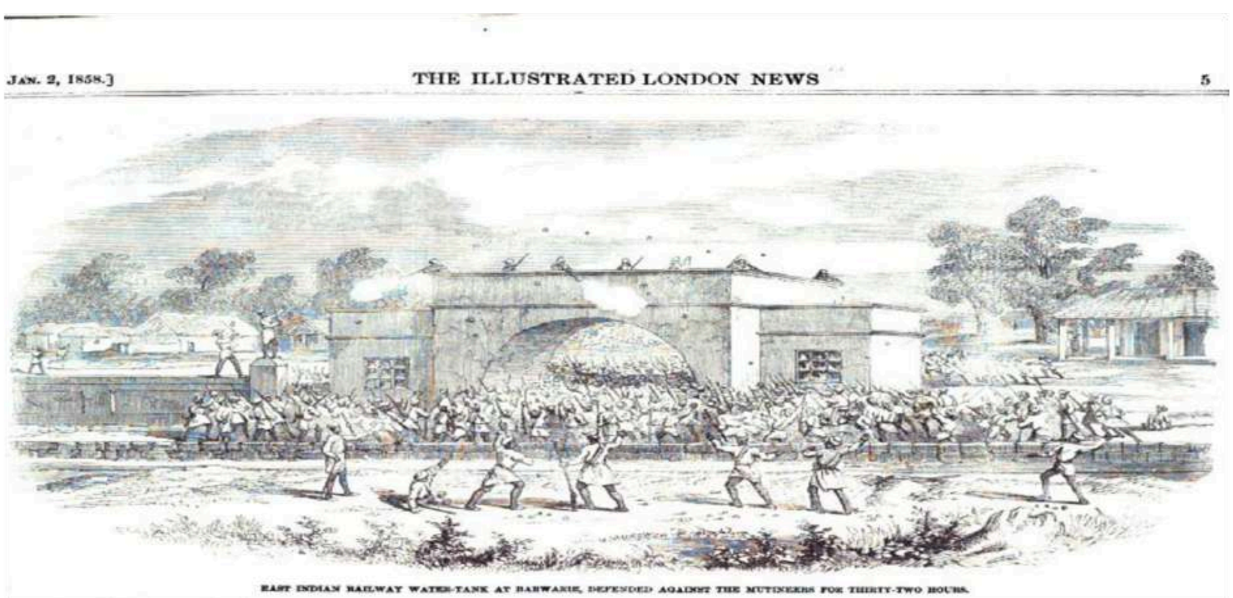

इस दौरान उन्होंने आस-पास की सभी यूरोपीय संपत्ति की लूट और विनाश को देखा। श्री स्मिथ, एक रेलवे अधिकारी, वहाँ उनके साथ शामिल होने के लिए श्री थॉमस (एक अन्य अधिकारी) के साथ भागने लगे , लेकिन श्री थॉमस को रास्ते में ही जान गवानी पड़ी जबकि श्री स्मिथ घायल हो गए और बड़ी मुश्किल से संघर्ष के बाद 'टंकी' तक पहुँचे । बाद में रेजीमेंट का एक दल, बचाव के लिए वहा पहुँचा।

1857 के व्यापक विद्रोह ने न केवल राजनीतिक और सामाजिक स्वरूप को प्रभावित किया, बल्कि भारतीय रेलवे नेटवर्क पर भी गहरा प्रभाव डाला। ईस्ट इंडियन रेलवे की कई योजनाएँ, मार्ग-निर्धारण और निर्माण-कार्य इस उथल-पुथल के कारण पुनर्विचार के दायरे में आ गए।

15 नवम्बर 1858 को इलाहाबाद में मुख्य इंजीनियर एडवर्ड पर्सर की अध्यक्षता में ईस्ट इण्डियन रेलवे के इंजीनियरों की बैठक हुई। बैठक में फ़ैसला लिया गया कि इलाहाबाद के कैंटोनमेंट चर्च में भित्ति स्मारक (दीवार पर स्थापित कलाकृति का त्रि-आयामी रूप) बनवाया जाए। इस स्मारक पर उन सभी अंग्रेज़ इंजीनियरों के नाम अंकित करने का विचार था, जो 1857 के संघर्षकाल के दौरान उत्तर-पश्चिमी प्रांतों में कार्य करते हुए मारे गए थे। उन्हें *"एक ही उद्देश्य के लिए बलिदान देने वाले"* के रूप में वर्गीकृत करने की बात कही गई।

कानपुर स्टेशन के डिजाइनर, आर्किटेक्ट मिस्टर रे को इस स्मारक का डिज़ाइन और निर्माण कार्य सौंपा गया।

## रेल मार्ग में परिवर्तन

सरकार इस निष्कर्ष पर पहुँची कि सुरक्षा और प्रशासनिक आवश्यकताओं को देखते हुए **कानपुर से आगे ऊपरी प्रांतों की रेलवे लाइन के मार्ग में परिवर्तन** किया जाना चाहिए। प्रस्ताव था कि कानपुर से आगे लाहौर के मार्ग में जाने वाली इस लाइन का अंतिम स्टेशन (टर्मिनस) अब दिल्ली के स्थान पर सम्भवतः मेरठ किया जाय।

हालाँकि, ईस्ट इंडियन रेलवे कंपनी शिकोहाबाद से दिल्ली के मध्य निर्माण-कार्यों पर **पहले ही भारी निवेश** कर चुकी थी। अतः कंपनी ने स्पष्ट किया कि मार्ग परिवर्तन की स्थिति में यह व्यय **सरकार से प्रतिपूर्ति के रूप में** वसूल किया जाएगा।

## दिल्ली से लाहौर तक की रेलवे लाइनः

ईस्ट इंडियन रेलवे ने 28 अप्रैल 1857 को सतलज नदी का सर्वेक्षण किया, ताकि यह निर्धारित

किया जा सके कि प्रस्तावित रेलवे लाइन को नदी के किस बिंदु से पार कराना सबसे उपयुक्त होगा। यह सर्वेक्षण वर्ष 1853 में ईस्ट इंडियन रेलवे कंपनी और अपर इंडिया रेलवे कंपनी के बीच हुए एक समझौते के अनुरूप किया गया था। यह समझौता ईस्ट इंडिया कंपनी की पहल पर संपन्न हुआ था, जिसका उद्देश्य उत्तर भारत में रेल नेटवर्क के विस्तार को संगठित एवं समन्वित रूप से आगे बढ़ाना था।

ईस्ट इंडियन रेलवे का हमेशा से यह दावा था कि दिल्ली से लाहौर तक की रेलवे लाइन का निर्माण कार्य उसी को सौंपा जाना चाहिए, और इसी अपेक्षा में उसने प्रारंभिक सर्वेक्षण का काम आरम्भ किया था।

लेकिन भारत सरकार ने अनुशंसा की कि यह लाइन पंजाब रेलवे कंपनी द्वारा बनाई जाए। लॉर्ड स्टेनली द्वारा इस राय को स्वीकार किए जाने पर ईस्ट इंडियन रेलवे को अपना दावा अनिच्छा के साथ छोड़ना पड़ा।

**परीक्षणः**

बुधवार, 1 सितम्बर 1858 की सुबह 8 बजे ईस्ट इंडियन रेलवे के अधिकारियों और इंजीनियरों का एक दल हावड़ा से 'अजय नदी' की ओर एक विशेष ट्रेन से रवाना हुआ। यह कोई साधारण ट्रेन नहीं थी बल्कि यह ईस्ट इण्डियन रेलवे की नई बन रही रानीगंज लाइन की पहली आधिकारिक ट्रायल ट्रिप थी। दल में कंपनी के एजेंट **मिस्टर पामर**, मुख्य अभियंता **मिस्टर टर्नबुल**, सरकारी परामर्शदाता अभियंता **मेजर गुडविन**, उनके सहायक **कैप्टन हॉजसन** तथा कुछ अन्य लोग भी शामिल थे।

ट्रेन बर्दवान में थोड़ी देर रुकी, फिर 11:15 बजे रानीगंज जंक्शन पहुँची। इसके बाद नई बिछाई लाइन पर धीरे-धीरे आगे बढ़ी। रास्ते में दो घंटे की रुकावट हुई क्योंकि लाइन पर कोई अवरोध था। आख़िरकार दोपहर 3:30 बजे अर्धनिर्मित बेदिया स्टेशन पहुँचे। बेदिया स्टेशन 'अजय नदी' से सिर्फ़ एक मील दूर था और बर्दवान से लगभग 30 मील।

इसी दौर की एक यात्रा का वर्णन टर्नबुल ने अपने संस्मरण में किया हैः दल जब बर्दवान स्टेशन लौटा तो वहाँ भोजन का प्रबंध पामर की अध्यक्षता में किया गया था। भोजन कुछ औपचारिक-सा आयोजन बन गया था और पामर लगातार उन सिविल अधिकारियों को खुश करने की कोशिश करता रहा, जो शासन में हुए नए परिवर्तन से असहज थे। ईस्ट इंडिया कंपनी से सत्ता छिनकर क्राउन को मिलना उन्हें अचानक और कठोर परिवर्तन जैसा लगा था।

*(भारत में कंपनी राज समाप्त हो चुका था और अब सीधे ब्रिटिश ताज (क्राउन) का शासन शुरू हो रहा था। 1857-58 के स्वतंत्रता संग्राम को दबाने के बाद ब्रिटिश संसद ने "गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया एक्ट 1858" पारित किया था। ईस्ट इंडिया कंपनी के क्षेत्रों का प्रशासन क्राउन द्वारा किया जाने लगा।)*

पामर ने एक छोटा-सा भाषण देते हुए कहा कि वह नई व्यवस्था की भी उतनी ही सफलता की कामना करता है जितनी कि पुरानी प्रणाली को मिली थी—हालाँकि स्वयं उसे भी इसकी अपेक्षा कम ही थी। यह बात मेज़ पर बैठे लोगों द्वारा तालियों के साथ स्वीकार की गई, परन्तु टर्नबुल लिखते हैं कि जिन भी अंग्रेज़ अधिकारियों से वे मिले, वे इस परिवर्तन को नापसंद ही करते थे। उन्हें भय था कि उनकी प्रतिष्ठा घट जाएगी और भारत का प्रशासनिक ढाँचा अव्यवस्थित हो जाएगा।

किन्तु समय के साथ उनकी आशंकाएँ असत्य साबित हुईं। परिवर्तन के पीछे जो ऐतिहासिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ थीं, वे अनिवार्य थीं, और आगे चलकर इन्हीं परिवर्तनों ने भारत में शासन-व्यवस्था की दिशा को नए सिरे से निर्धारित किया।

टर्नबुल आगे लिखते हैं कि जितने भी सिविल सर्वेंट उनसे मिले, सबको यह बदलाव पसंद नहीं था। वे समझते थे कि परिस्थितियाँ इसे अनिवार्य बना रही थीं, फिर भी उन्हें अपनी प्रतिष्ठा और भारत के कल्याण दोनों की चिंता थी। बाद में पता चला कि दोनों ही आशंकाएँ गलत थीं।

बर्दवान से आगे की लाइन का निर्माण सबसे पहले मि. जॉर्ज सिब्ली और बाद में मि. जे. ई. विल्सन के निर्देशन में हुआ। उस समय इंजीनियरों का कार्य अत्यंत चुनौतीपूर्ण माना जाता था, क्योंकि भारत की भौगोलिक एवं जलवायु संबंधी परिस्थितियाँ यूरोप से बिल्कुल अलग थीं। सबसे बड़ी चुनौती थी अजय नदी पर पुल बनाना।

"द इंजीनियर्स जर्नल" में प्रकाशित विवरण के अनुसार 'अजय नदी' पर बन रहा पुल इस बात का उदाहरण था कि कठिन परिस्थितियों में भी भारत में बड़े इंजीनियरिंग कार्य सम्भव हैं। यद्यपि निर्माण में अपेक्षाकृत अधिक समय लग रहा था, फिर भी यह तथ्य महत्त्वपूर्ण था कि मानसून के दिनों में अजय नदी की चौड़ाई हुगली नदी (हावड़ा के पास) जितनी फैल जाती थी। ऐसी स्थिति में निर्माण कार्य में लगे इंजीनियरों पर धीमी गति से कार्य किये जाने का आरोप लगाना उचित नहीं था।

रिपोर्ट में उल्लेख था कि पुल की कुल लंबाई लगभग 2,200 फीट होगी—यानी लंदन ब्रिज की लंबाई के दोगुने के करीब। इसके सभी पाये (फाउंडेशन) और खम्भे लगभग पूरे किए जा चुके थे,

और यह विश्वास जताया गया था कि अगले वर्ष इसी समय तक ऊपरी संरचना भी पूरी हो जाएगी, ताकि रेलगाड़ियाँ उस पर से चल सकें। अजय नदी के दूसरे किनारे की पटरियाँ लगभग तेईस मील तक बिछा दी गई थीं, जिन्हें 'मोर नदी' (मयूराक्षी नदी) के तट पर स्थित साइंथिया स्टेशन तक खोलने की तैयारी थी। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार अजय पुल की सभी मेहराबें जून 1859 तक पूरी कर ली जानी थीं। ए. सी. बेल साइंथिया क्षेत्र में कार्य का संचालन कर रहे थे।

इसी बीच बंगाल सरकार इस रेलखंड के शीघ्र उद्घाटन को लेकर चिंतित होने लगी। स्थिति का प्रत्यक्ष जायज़ा लेने के लिए बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर सर जॉन ग्रांट स्वयं निरीक्षण हेतु निकलना चाहते थे। अक्तूबर 1858 में टर्नबुल ने एक निरीक्षण दल का प्रबंध किया। सर जे. पी. ग्रांट, प्लाउडेन, कर्नल स्ट्रेची, सर जेम्स कॉलविल और सर आर्थर बुलर उनके साथ 'अजय नदी' तक गए। व्यापक पैमाने पर चल रहे कार्य को देखकर वे आश्चर्यचकित हुए, क्योंकि उन्हें इसके वास्तविक आकार और जटिलता का अनुमान पहले नहीं था। दल वापस बर्दवान लौटा और रात वहीं मि. केल्नर के होटल में बिताई।

गर्मी का मौसम यूरोपीय इंजन ड्राइवरों और उनके सहायकों के लिए काल बन गया। जून 1858 के एक ही सप्ताह में तीन इंग्लिश ड्राइवर गर्मी की वजह से काल-कवलित हो गए।

### मि. रेन्डल का दौरा

1857 के विद्रोह के बाद रेलवे निर्माण कार्य में संभावित विलंब को लेकर चिंतित होते हुए, बोर्ड ने अपने परामर्शी अभियंता मिस्टर मीडोज़ रेंडेल को 20 दिसंबर 1857 को कोलकाता भेजा। उनका उद्देश्य रेलवे कंपनी और सरकार के मुख्य अभियंताओं से चर्चा कर ऐसे उपाय तय करना था, जिनसे निर्माण कार्य बाधित न हों।

रेंडेल, कैप्टन यंग और टर्नबुल 8 फरवरी को कोलकाता से निकले। वे मार्ग के विभिन्न हिस्सों का निरीक्षण करते हुए आगे बढ़ते रहे और 26 फरवरी को मोंघिर (अब मुंगेर) पहुँचे। उस समय रेल सुरंग का काम रोचक अवस्था में था। जिस चट्टान (स्फटिक) को काटकर सुरंग बनाई जा रही थी, वह अत्यंत कठोर और ठोस थी। इसके कारण काम में अधिक समय, श्रम और बारूद की खपत हो रही थी।

रेंडेल ने सुरंग के कार्यों की प्रगति के बारे में लिखा:

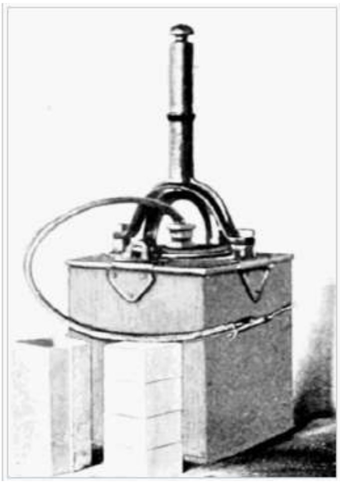

“सुरंग की कुल लंबाई लगभग 900 फीट ही होने के कारण उसमें बोरिंग के लिए किसी मशीन का उपयोग नहीं किया गया। पूरा काम स्थानीय मज़दूरों द्वारा छेद बनाकर और बारूद से विस्फोट कर आगे बढ़ाया जा रहा था। सुरक्षा कारणों से मैंने गन-कॉटन (एक प्रकार का विस्फोटक) का पूरा उपयोग नहीं करने दिया। रेज़िडेंट इंजीनियर जे. बी. हैरिस बहुत अच्छा काम कर रहे थे। उस समय पूर्वी छोर से 400 फीट और पश्चिमी छोर से 153 फीट खुदाई हो चुकी थी। बीच में सिर्फ़ 347 फीट बाक़ी था। हमने अनुमान लगाया कि दस महीने में सुरंग पूरी हो जाएगी।”

कानपुर तक पूरी लाईन के निर्माण कार्यों का निरीक्षण करने के बाद—जहाँ से आगे बढ़ना उस समय सुरक्षित नहीं माना गया—मिस्टर रेंडेल इंग्लैंड लौट गए और उन्होंने अपना विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। अपने निरीक्षण के आधार पर उन्होंने प्रमुख पुलों के निर्माण में लोहे की गर्डरों के उपयोग का सुझाव दिया। उनका मत था कि इससे निर्माण समय में उल्लेखनीय कमी आएगी क्योंकि उस समय पर्याप्त मात्रा में ईंटों की उपलब्धता सुनिश्चित नहीं हो पा रही थी।

उन्होंने बताया कि भारत में निर्माणाधीन परियोजनाओं के लिए, या मार्ग में भेजी जा चुकी सामग्री में, लगभग **दो मील लंबाई** के लोहे के बीम और गर्डर मौजूद थे। ये ईंट की कमी को पूरा कर देंगे। इससे न केवल समय बचेगा, बल्कि कम-से-कम 40,000 पौंड (उस समय की बड़ी रकम) की बचत भी होगी।”

## परिवहन अवरोध

अध्यक्ष ने सूचित किया कि कलकत्ता से रेलवे सामग्री की ढुलाई में आ रही कठिनाइयाँ भी निर्माण कार्य में बाधा और विलंब का एक प्रमुख कारण थी। भूमि और जल—दोनों माध्यमों के लगभग सभी परिवहन साधन उस समय सरकार ने राजनीतिक एवं सैन्य आवश्यकताओं के लिए अधिग्रहित कर लिए थे। इस स्थिति को देखते हुए बोर्ड ने निर्णय लिया कि रेलवे सामग्री को कलकत्ता से उनके गंतव्य तक पहुँचाने के लिए इंग्लैंड में एक स्टीमबोट का निर्माण कराया जाए।

निदेशकों के सामने उस समय सबसे बड़ी चुनौती सामग्री, सामान तथा रोलिंग स्टॉक को देश के अंदरूनी हिस्सों तक पहुँचाने की थी। यह समस्या इसलिए और बढ़ गई क्योंकि सरकार स्वयं भारी मात्रा में परिवहन संसाधनों की माँग कर रही थी।

उन्होंने यह भी बताया कि कार्य में देरी का एक अन्य कारण, विशेषकर निचले प्रांत में बर्दवान और राजमहल के बीच, ईंटों जैसे निर्माण-सामग्री की भयंकर कमी थी, क्योंकि बंगाल की मिट्टी ऐसी थी कि वहाँ पत्थर मिलना लगभग असंभव था।

उत्तर-पश्चिमी प्रान्तों में विद्रोह 1859 तक चलता रहा और रेल का निर्माण कार्य सशस्त्र सुरक्षा के बीच करना पड़ा। इलाहाबाद-कानपुर लाइन भले ही 1857 में तैयार हो चुकी थी, लेकिन जनता के लिए इसे 3 मार्च 1859 को ही खोला गया। तब तक यह केवल सैनिक उपयोग और रेलवे की अपनी सामग्री ढोने के लिए ही इस्तेमाल होती रही। ट्रेन से सैनिकों का परिवहन उस समय के सैनिकों के लिए एक अविश्वसनीय और आश्चर्यचकित करने वाली बात थी, क्योंकि उन्होंने जीवन में कभी इस नई यातायात-पद्धति के बारे में सुना तक नहीं था।

**कार्य प्रगति की निगरानी हेतु फोटोग्राफी का उपयोग**

भारत में रेलवे निर्माण कार्यों की प्रगति की निगरानी के लिए फोटोग्राफी का उपयोग ईस्ट इंडियन रेलवे द्वारा वर्ष 1858 में प्रारम्भ किया गया। *हेरापैथ्स जर्नल* ने 13 मार्च 1858 को यह रिपोर्ट प्रकाशित की कि गुरुवार की शाम यूनिवर्सिटी कॉलेज में सोन नदी पर निर्माणाधीन लगभग दो मील लंबे रेलवे पुल के कार्य की स्थिति से संबंधित फोटोग्राफिक रिपोर्ट प्रस्तुत किए गए। यह पुल उस समय ईस्ट इंडियन रेलवे कम्पनी द्वारा बनाया जा रहा था।

रिपोर्ट में उल्लेख था:

"दूरस्थ स्थानों पर हो रहे कार्यों की ऐसी फोटोग्राफिक रिपोर्टें न केवल अत्यंत रोचक होती हैं, बल्कि गणनात्मक रूप से सटीक भी होती हैं। ऐसी रिपोर्ट प्रस्तुत करने वाले अधिकारी न तो कार्य की प्रशंसा को बढ़ा-चढ़ाकर दिखा सकते हैं, न ही उसे कमतर प्रस्तुत कर सकते हैं। क्योंकि सूर्य की रोशनी से लिया गया चित्र किसी भी तरह की बढ़ा-चढ़ा कर बयान करने की क्षमता नहीं रखता। उसके नियम अचूक हैं, और उन्हीं के आधार पर यह प्रतिवेदन तैयार होता है।"

इस पद्धति को प्रारम्भिक रूप से अन्य स्थानों पर शुरू करने का **श्रेय मिस्टर विग्नोल्स और मिस्टर हाइड क्लार्क** को दिया गया। इसके अतिरिक्त, मॉन्ट्रियल में सेंट लॉरेंस नदी पर विक्टोरिया ब्रिज के निर्माण कार्य में भी मिस्टर स्टीफेन्सन द्वारा इसी पद्धति का उपयोग किया जा रहा था।

## नस्लभेद

भारतीय रेल के शुरुआती दौर में नस्लभेद की घटनाएँ आम थीं। 'भास्कर' नामक पत्र के संपादक द्वारा एक ऐसी ही घटना का उल्लेख किया कि एक बार तीन यूरोपीय पुरुष और दो यूरोपीय महिलाएँ सेकंड-क्लास डिब्बे में यात्रा कर रहे थे। उसी डिब्बे में दो भारतीय यात्री भी बैठे थे, जो बहुत अच्छे और कीमती वस्त्र पहने थे। यूरोपीय महिलाओं को भारतीय यात्रियों का साथ खल रहा था। वे कहने लगीं कि इतने अच्छे कपड़े पहनने के बावजूद भी ये लोग उन्हें लगभग "नंगे" जैसे लगते हैं—यह उनकी साम्राज्यवादी मानसिकता और नस्लवादी दृष्टिकोण का संकेत था।

इस पर साथ बैठे यूरोपीय पुरुषों ने भारतीय यात्रियों को आदेश दिया कि वे अगले स्टेशन पर उतर जाएँ और किसी अन्य डिब्बे में चले जाएँ।

जब ट्रेन स्टेशन पर रुकी तो इस झगड़े की आवाज़ सुनकर कुछ रेलवे कर्मचारी मौके पर पहुँचे। उन्होंने भारतीय यात्रियों को जबरन नीचे उतारा। विरोध करने पर भारतीयों को बुरी तरह पीटा गया, यहाँ तक कि उनके मुँह से खून निकलने लगा। ट्रेन आगे बढ़ गई और पीड़ित वहीं अपने दुख पर रोते रह गए।

## बहस :

1857 के स्वतंत्रता संग्राम ने यह स्पष्ट कर दिया था कि भारत में रेलवे का सैन्य और वाणिज्यिक महत्व कितना अधिक है। यह भावना व्यापक थी कि यदि भारत में रेलवे नेटवर्क अधिक तेजी से विकसित हुआ होता, तो विद्रोह को या तो रोका जा सकता था या तुरंत नियंत्रित किया जा सकता था।

17 जून 1857 को **ब्रिटिश सांसद मिस्टर वाटकिन** ने प्रस्ताव रखा कि—

> "ईस्ट इंडियन रेलवे की धीमी प्रगति भारत में सैन्य उपस्थिति के लिए खतरा है और उस देश के औद्योगिक विकास को भी बाधित करती है।"

उन्होंने शिकायत की कि रेल परियोजनाएँ ईस्ट इंडिया कंपनी के अनावश्यक प्रतिबंधों तथा हस्तक्षेप के कारण प्रभावित हो रही हैं। उनका मत था कि यदि प्रस्तावित मुख्य रेल मार्ग बन चुके होते, तो विद्रोह को प्रारंभ में ही कुचल दिया जाता। उनके अनुसार यह भारत की सुरक्षा और नियंत्रण का महत्वपूर्ण विषय था।

बहस में यह भी कहा गया कि यदि रेलमार्ग अधिक विस्तृत होते, तो सैनिकों को तेजी से स्थानांतरित किया जा सकता था, और विद्रोह को शीघ्र शांत किया जा सकता था। लेकिन इसके विपरीत तर्क यह दिया गया कि विद्रोह के केंद्रों पर रेलवे सबसे पहले नष्ट कर दिए जाते, इसलिए रेल से तेज़ी से सैनिक पहुँचाने की कल्पना व्यावहारिक नहीं थी। यह भी कहा गया कि भारत में पहले से उपलब्ध सीमित रेल लाइनों पर भी सैनिक उपलब्ध नहीं थे—तो कल्पना करना निरर्थक है कि विस्तृत रेलवे नेटवर्क होने पर हालात बिल्कुल अलग होते।

एक स्थानीय अखबार ने व्यंग्य करते हुए कहा कि जो लोग 1860 तक राजमहल तक रेल यात्रा की उम्मीद करते हैं, वे तब तक शायद इस दुनिया में न रहे हों। इसमें बताया गया कि समस्या रेलवे कंपनी के अधिकारियों की नहीं, बल्कि ब्रिटिश शासन की लचर, लालफीताशाही प्रणाली की थी, जिसमें छोटी-छोटी बातों के लिए महीनों तक काम रुका रहता था।

अख़बार ने यह भी साफ़ कहा कि ईस्ट इंडियन रेलवे कंपनी के निदेशकों की कोई कमी नहीं थी; असली कारण था भारत की "डबल गवर्नमेंट" (ईस्ट इंडिया कंपनी + ब्रिटिश सरकार) की निरर्थक और अत्यधिक दखलअंदाजी, जिसके कारण छोटी-छोटी बातों पर भी कार्य रुक जाते थे।

## पश्चिमी प्रेसीडेंसी और उत्तर–पश्चिम प्रांतों के बीच रेल संपर्क का अभाव

1857 के विद्रोह ने यह कठोर सच्चाई उजागर कर दी कि भारत के प्रमुख प्रांतों—विशेषकर पश्चिमी प्रेसीडेंसी और उत्तर–पश्चिम प्रांत के बीच रेल संपर्क बेहद धीमी गति से विकसित हुआ था। इस कमी के कारण, बॉम्बे प्रेसिडेंसी से सैनिकों को कानपुर जैसे विद्रोह स्थल तक जल्दी पहुँचाना संभव नहीं हो पाया।

बंबई प्रेसीडेंसी में तैनात यूरोपीय सैनिक—पूना, बंबई और डीसा में स्थित—कानपुर या मेरठ जैसे महत्वपूर्ण केन्द्रों तक समय पर नहीं पहुँच सके। उस समय यात्रा की गति इतनी धीमी थी कि महीनों की तेज़ पदयात्रा के बाद ही वे उत्तर भारत के विद्रोहग्रस्त क्षेत्रों तक पहुँच सकते थे। रेल संपर्क न होने के कारण, ये सैनिक मानो भौगोलिक रूप से भारत में न होकर किसी दूरस्थ महाद्वीप में स्थित हों।

उत्तर–पश्चिम प्रांतों में बंगाल सेना की बड़ी संख्या तैनात थी, और वहीं एकमात्र रेल लाइन निर्माणाधीन थी—वह भी उसी दिशा में, जहाँ बंगाल नेटिव इन्फैंट्री की महत्वपूर्ण टुकड़ियाँ तैनात थीं।

लॉर्ड डलहौज़ी ने कई बार यह स्पष्ट किया था कि पश्चिमी प्रेसीडेंसी को उत्तर–पश्चिम प्रांतों से जोड़ने वाला रेल मार्ग **राजनीतिक और वाणिज्यिक—दोनों दृष्टियों से अत्यंत आवश्यक** है। लेकिन उनके इस आग्रह को सीधे–सीधे यह कहकर खारिज कर दिया गया कि ऐसे मार्ग की कोई उपयोगिता नहीं है। बाद की घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि इस निर्णय ने प्रशासनिक और सैन्य दोनों स्तरों पर भारी बाधाएँ उत्पन्न कीं।

उस समय यह माना जाने लगा था कि भारत जैसे विशाल भूभाग में किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए सैनिकों की त्वरित आवाजाही तभी संभव है, जब देश भर में एक सुव्यवस्थित और परस्पर जुड़े रेल नेटवर्क का निर्माण किया जाए, जो किसी भी जिले या छावनी तक पहुँचने में सहायता करे।

लेकिन रेल निर्माण की प्रगति बार-बार प्रशासनिक दख़ल, विभागीय जटिलताओं और निर्माणाधीन लाइनों के विस्तार को मंजूरी देने में अनावश्यक विलंब से बाधित होती रही।

उस समय के एक समाचार पत्र ने टिप्पणी की कि जिस अवधि में अमेरिका ने लगभग 20,000 मील रेल लाइन तैयार कर ली, भारत में मुश्किल से 300 मील रेल लाइन बन पाई—जबकि कुछ ही वर्ष पहले दोनों देशों में रेल मार्ग की लंबाई शून्य थी।

यह धीमी गति केवल तकनीकी चुनौती नहीं थी, बल्कि नीतिगत निर्णयों, अनुमोदन में देरी और दोहरे प्रशासनिक ढांचे की भारी कमियों का परिणाम थी।

पत्र ने चेतावनी दी कि नेटिव सेना में बड़े पैमाने पर विद्रोह की घटनाओं का प्रभाव वर्षों तक बना रहेगा, और इसे शांत कराने में जितना व्यय होगा, वह एक व्यापक रेल नेटवर्क तैयार करने की लागत से कहीं अधिक होगा।

## संसदीय समिति का गठन

**1858** में भारत में रेलवे निर्माण में देरी के कारणों की जाँच करने और उचित उपाय सुझाने के लिए एक संसदीय समिति गठित की गई।

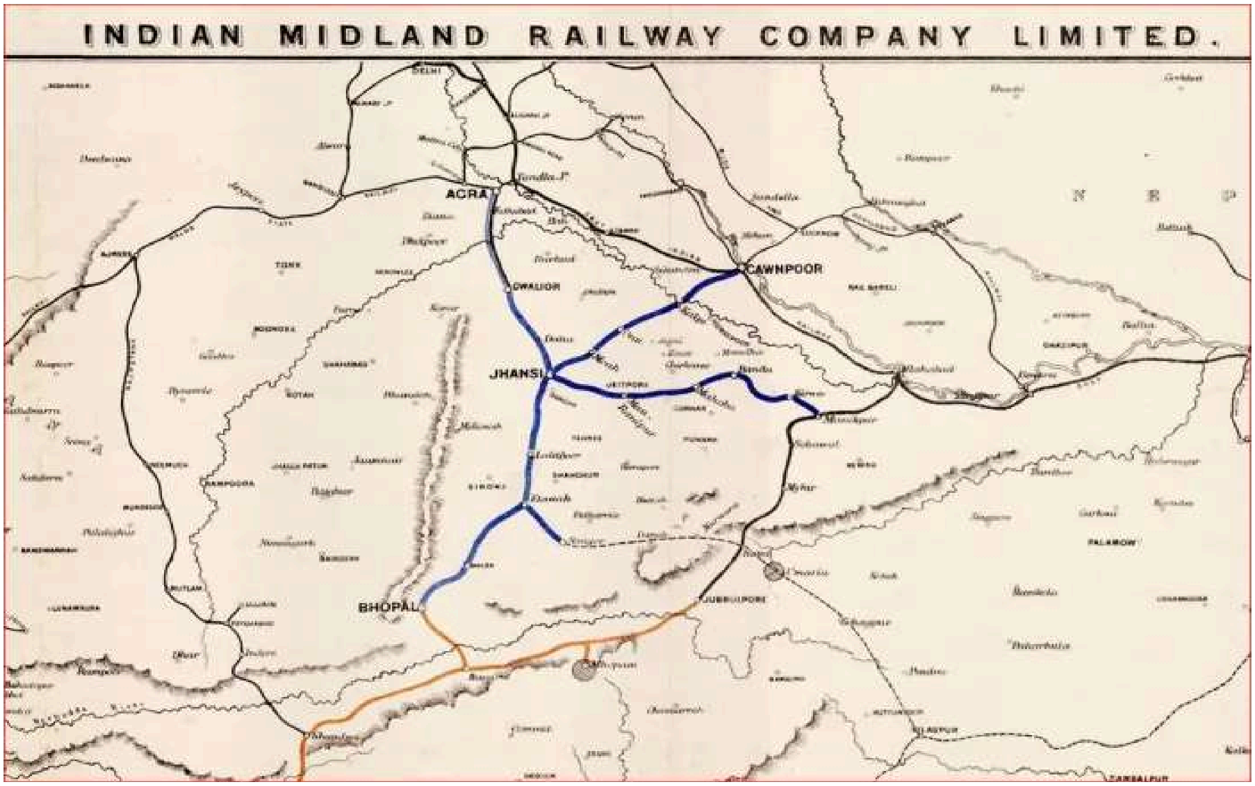


हाउस ऑफ कॉमन्स में सांसद श्री लिडेल ने भारत में रेलवे निर्माण में हुई देरी पर ध्यान आकर्षित किया। उनके अनुसार, देरी का कारण सरकार का निरीक्षण करने का तरीका था। परामर्शी अभियंता एक सैन्य व्यक्ति था। निरीक्षक सरकार द्वारा चुने जाते थे। रेलवे कंपनियाँ अपने ठेके खुद नहीं कर सकती थीं, और सरकार के नियंत्रण की पूरी व्यवस्था देरी पैदा करने वाली थी। उन्होंने व्यावसायिक, सैन्य और आर्थिक आधार पर कहा कि भारत में रेलवे को बढ़ावा देना सरकार का कर्तव्य है, और इसके लिए व्यवस्था में बदलाव जरूरी है। उन्होंने इस विषय पर जाँच के लिए एक चयन समिति (select committee) गठित करने का प्रस्ताव रखा।

इस प्रस्ताव का समर्थन ईस्ट इंडियन रेलवे के अध्यक्ष और सांसद श्री क्रॉफर्ड ने किया, जिन्होंने भारत में रेलवे की शुरुआत में देरी की पूरी जिम्मेदारी बोर्ड ऑफ कंट्रोल पर डाली।

संसदीय समिति की रिपोर्ट में कहा गया कि 1857 के विद्रोह ने पिछले साल मई से दिसंबर तक ऊपरी बंगाल और उत्तर-पश्चिमी प्रांत में रेलवे कार्यों को पूरी तरह रोक दिया, और इसके विनाशकारी परिणाम अभी कुछ समय तक महसूस होते रहेंगे, हालांकि कार्यों को हुई वास्तविक क्षति अपेक्षा से कम थी। अन्य प्रेसिडेंसियों में रेलवे कार्य विद्रोह और युद्ध की अशांति से अब तक मुक्त रहे थे।

समिति नें अपनी राय प्रस्तुत कीः **पहला,** निजी उद्यम को इन बड़े सार्वजनिक कार्यों सौंपना सरकार का बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय था; **दूसरा**, इतने बड़े और नए कार्यों में पूँजी लगाने के लिए गारंटीड ब्याज जरूरी था, और **तीसरा**, भारतीय राजस्व को अनुचित खर्च से बचाने के लिए सरकार का नियंत्रण आवश्यक था, और यह शेयरधारकों के हित में भी था।

समिति ने यह भी कहा कि रेलवे से जुड़े अनुबंधों को केवल काग़ज़ी शब्दों में बाँधकर नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि उनके पीछे के उद्देश्य और भावना को समझना ज़रूरी है। रिपोर्ट में माना गया कि जटिल नियमों, अनावश्यक औपचारिकताओं और विभागों के बीच तालमेल की कमी के कारण रेलवे का काम बार-बार अटकता रहा।

इसलिए सुझाव दिया गया कि प्रक्रियाओं को सरल बनाया जाए, अलग-अलग संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित किया जाए और रेलवे निर्माण को एक साझा लक्ष्य के रूप में आगे बढ़ाया जाए। तभी भारत की अपार कृषि, व्यापारिक और खनिज संभावनाओं के अनुरूप रेलवे का विस्तार संभव हो सकेगा और यह काम केवल प्रशासनिक योजना न रहकर देश के विकास से जुड़ा वास्तविक साधन बन पाएगा।

1857 के भारतीय विद्रोह के बाद, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट 1858 पारित हुआ, जिससे ब्रिटिश क्राउन ने भारतीय उपमहाद्वीप पर सीधा नियंत्रण ग्रहण किया, और अब देश में रेलवे निर्माण को एक नई गति मिलने वाली थी।

## विद्रोह का वित्तीय प्रभाव

1857 के स्वतंत्रता संग्राम का असर केवल राजनीतिक या सैन्य स्तर तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने रेलवे निर्माण की आर्थिक गणनाओं को भी पूरी तरह बिगाड़ दिया।

बंगाल के मुख्य अभियंता श्री टर्नबुल और उत्तर-पश्चिमी डिवीजन के मुख्य अभियंता श्री ले मेसुरियर ने अनुमान लगाया कि ईस्ट इंडियन रेलवे को स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हुई क्षति और विनाश के कारण दो मिलियन पाउंड स्टर्लिंग का अतिरिक्त खर्च उठाना पड़ा।

27 अक्टूबर 1859 को हुई ईस्ट इंडियन रेलवे की अर्ध-वार्षिक सभा में अध्यक्ष ने बताया कि विद्रोह के कारण कलकत्ता से दिल्ली तक की लाइन का निर्माण खर्च मूल अनुमान से कहीं अधिक हो गया। उनका अनुमान था कि लागत में तीन मिलियन पाउंड की वृद्धि हुई।

सचिव सर चार्ल्स वुड को सौंपी 1859 की रेलवे रिपोर्ट (जुलैंड डैनवर्स द्वारा, जो संसद में भी पेश की गई) में भी लागत वृद्धि को तीन मिलियन पाउंड आँका गया।

बोर्ड, विद्रोह के बाद मजदूरी और सामग्री के असाधारण मूल्य वृद्धि के लिए तैयार नहीं था। भारत में होने वाले कुल खर्च का आधे से अधिक हिस्सा इससे प्रभावित हुआ, इसलिए कुल लागत पर असर बोर्ड की कल्पना से कहीं ज्यादा गंभीर था।

दिल्ली तक की लाइन का संशोधित अनुमान 17 मिलियन पाउंड था (जिसमें रोलिंग स्टॉक के लिए प्रति मील 2,300 पाउंड यानी कुल 2.53 मिलियन शामिल), जिसमें से तीन मिलियन पाउंड अप्रत्याशित खर्च था।

अध्यक्ष ने कहा: "शेयरधारक इस तथ्य की अहमियत समझेंगे कि संथाल विद्रोह और हाल के 1857 के विद्रोह से हुई देरी, कठिनाइयों और कीमत वृद्धि के बावजूद, 1,100 मील से ज्यादा लंबी दिल्ली लाइन मूल समय में ही पूरी हो जाएगी, और लागत भी मूल अनुमान से सिर्फ उतना ही अधिक होगा जिसका अनुमान हम कर चुके हैं।"

अक्टूबर 1859 की शेयरधारकों की बैठक में ईस्ट इंडियन रेलवे के अध्यक्ष क्रॉफर्ड ने यह भी स्पष्ट किया कि विद्रोह के बाद बढ़ी कीमतों के लिए सरकार से मुआवज़े की उम्मीद कम है, लेकिन विद्रोह

के दौरान नष्ट हुई रेलवे संपत्ति के लिए कंपनी का दावा बनता है। इसके लिए भारत में तैनात अधिकारियों को हुए नुकसान का विस्तृत विवरण तुरंत तैयार करने के निर्देश दिए गए। साथ ही, दिल्ली तक रेलवे लाइन को यमुना के बाएँ किनारे मोड़े जाने से जो अतिरिक्त खर्च हुआ, उसके लिए भी सरकार से क्षतिपूर्ति की माँग की गई, क्योंकि पहले से स्वीकृत मार्ग पर कंपनी पहले ही भारी राशि खर्च कर चुकी थी।

1857 के विद्रोह के बाद भारत-सचिव ने कहा कि भारत की आय बढ़ाने की उनकी मुख्य उम्मीद **रेलवे के विस्तार** पर है – क्योंकि इससे बंजर जमीनें उपजाऊ बनेंगी और उत्पादन बढ़ेगा।

साथ ही, खर्च कम करने की उनकी लगभग एकमात्र उम्मीद सैन्य व्यय में कटौती थी, जो रेलवे से संभव हो सकेगी। रेलवे पूरे उपमहाद्वीप को जोड़ देगा, जिससे सैनिकों को एक साथ कई जगहों पर तुरंत प्रभावी बनाया जा सकेगा।

विद्रोह के बाद **गारंटी प्रणाली** (जहाँ भारतीय करदाता ब्रिटिश कंपनियों को 5% मुनाफा गारंटी देते थे)को देश पर बहुत भारी बोझ माना गया। इसलिए निर्णय हुआ कि भविष्य में सभी रेल लाइनें **राज्य खुद बनाएगा**, और पूँजी **कर्ज** या देश के **अधिशेष राजस्व** से जुटाई जाएगी।

यह नीति कुछ वर्षों तक चली, लेकिन युद्धों और अकाल से जुड़े खर्चों ने रेलवे कार्यों को रोकने पर मजबूर कर दिया।

**भारती मिश्रा**
अध्यक्षा, MCFWWO

# अभिव्यक्ति 'वाराणसी'

अद्भुत, अद्वितीय, रहस्य, रोमांच एवं चमत्कारों से भरा, पौराणिक शहर वाराणसी। सनातन धर्म की सारगर्भित भाव को पूर्णतया आत्मसात करता, आस्था की पराकाष्ठा, यहां जो केवल महसूस किया जा सकता। हज़ारों साल पुराने इतिहास स्थापत्य कला एवं सनातन धर्म के उद्गम स्थल को जीवंत रूप में देखना, एक अलग अनुभूति का एहसास कराता।

कहा जाता है कि वाराणसी बाबा विश्वनाथ के त्रिशूल पर विराजमान दुनिया का सबसे पुरातन शहर है, जहाँ मनुष्य को मृत्यु से भय समाप्त होने का एहसास होता है।

जीवन एवं मृत्यु को साथ चलते देखकर, भय नहीं लगता, ये बेखौफ दृष्टिकोण, इस शहर को और भी रहस्य,रोमांच से भर देता है।

जहाँ जीवन का प्रतीक दशाश्वमेध घाट, वहीं जीवन-मरण चक्र 'मोक्षदायिनी' में परिवर्तित मणिकर्णिका, कई सुलझे-अनसुलझे राज को इतिहास के पन्नों में समेटे, पौराणिक, चमत्कारिक, कथाओ की लंबी श्रृंखला, को याद दिलाने का प्रयास अनवरत जारी रखता है।

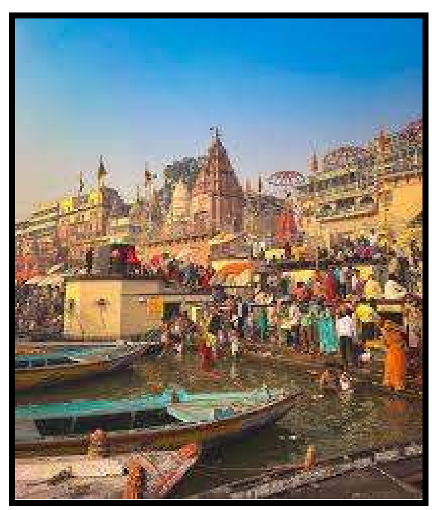

**रमेश चन्द्र**
प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त / रे.सु. बल एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी
मो. 7318060900

# उद्यम, कौशल विकास और लोक कल्याण (Hard Work, Skill Development and Public Welfare)

**उद्यमेन हि सिद्धयंति कार्याणि, न मनोरथैः।**
**नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशंतिमुखे मृगाः।।**

{अर्थात कार्य 'उद्यम' (ईमानदार श्रमसाध्य प्रयास या चेष्टा) से ही पूरे किये जाते हैं, केवल सोचने या चिंता करने मात्र से नहीं, जैसे कि किसी सोये हुए शेर के मुख में हिरन (उसका आहार) कभी खुद प्रवेश नहीं करता, बल्कि शेर को तेज दौड़ लगाकर उसे पकड़ने का एक जोखिम भरा श्रमसाध्य कठिन उपक्रम करना पड़ता है।}

इस संसार में कोई भी कार्य धैर्यपूर्वक किये गये **'उद्यम'** (कठिन परिश्रम) से ही पूरा होता है। इसलिए हमारा 'उद्यम' ही हमारी **'वास्तविक पूंजी'** (Real Capital)है। हमारी यह पूंजी **'कौशल विकास' (Skill Development through Training)** के माध्यम से ही निखरती और समृद्ध होती है। इसलिए यदि आप अपने देश को अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के आधार पर दुनिया का एक विकसित देश बनाना चाहते हैं, तो वर्तमान भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न जनकल्याणकारी कार्यक्रमों और अभियानों जैसे कि - “Make in India, Skill India”, “खेलो इंडिया”, “बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ”, “एक भारत-श्रेष्ठ भारत”, “संगठित भारत-सशक्त भारत”.... इत्यादि...को देश के बहुआयामी समग्र विकास की संपूर्णता में तथा उनकी मूल भावना के संदर्भ में समझने का प्रयास करें। भारत सरकार द्वारा उपरोक्त सभी कार्यक्रम भारत को एक लक्षित समयावधि में अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के आधार पर एक विकसित देश बनाने के उद्देश्य से प्रवर्तित किए गए हैं।

जो व्यक्ति या समाज स्वयं के तथा लोक (Public) के कल्याण की भावना से लगातार नई-नई चीजें सीखनें और उनका अनुप्रयोग (इस्तेमाल) करने की प्रवृत्ति रखता है, उसमें एक महान उद्यमी बनने की संपूर्ण संभावनाएं छिपी होती हैं। इसलिए किसी देश की नारी शक्ति (देश की लगभग आधी आबादी और सभ्यता-संस्कृति की आधारभूत शक्ति) का बहुमुखी विकास और संरक्षण कितना आवश्यक है, इसे आप भली-भांति समझ सकते हैं। सरकार द्वारा प्रवर्तित **'बेटी-बचाओ, बेटी पढ़ाओ'** अभियान को हमें इसी संदर्भ में देखने की जरूरत है। यह कार्यक्रम अथवा अभियान

देश की महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक विकास तथा प्रत्येक क्षेत्र में उनकी बराबर की भागीदारी को प्रोत्साहित और सुनिश्चित करने से जुड़ा हुआ कार्यक्रम है। ऐसा किया जाना, भारत को अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के आधार पर एक विकसित देश बनाने हेतु नितान्त रूप से अनिवार्य है।

किसी समाज और देश को उसके उद्यमी पुरुष और महिलायें ही हर तरह से और जीवन के हर क्षेत्र में समृद्ध और ताकतवर बनाते हैं। इसमें उस समाज और देश की महिलाएं और पुरुष समान रूप से शामिल हैं। दुनिया के पिछड़े, अविकसित तथा विकासशील देशों में देश की आधी आबादी के बहुमुखी विकास पर योजनाबद्ध तरीके से ध्यान नहीं दिया जाता है, जिसकी वजह से यह देश गरीबी, बेरोजगारी तथा अनेक प्रकार के प्रवंचन एवं शोषण के भयंकर दुष्चक्र में फंस जाते हैं। देश की आधी आबादी द्वारा देश को विकास के रथ को रोक दिया जाता है। अतः देश की नारी-शक्ति का बहुमुखी विकास अनिवार्य है।

एक आदर्श उद्यमी व्यक्ति के मौलिक लक्षणों का वर्णन निम्नलिखित संस्कृत श्लोक में बहुत ही सरल और सुंदर ढंग से अभिव्यक्त किया गया है, और बताया गया है, कि ऐसे व्यक्ति के पास **'लक्ष्मी अर्थात हर प्रकार की समृद्धि'** स्वयं चलकर आती है -

**उत्साहसंपंन्नम् अधीर्गसूत्रम्,**
**क्रियाविधिज्ञम्, व्यसनेसुअसक्तम्,**
**शूरं, कृतज्ञम्, दढ़सौहृदम् च,**
**लक्ष्मी स्वयं याति निवासहेतोः।**

.................................

श्लोक में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ ---
1-उत्साहसंपंन्नम्=उत्साह से युक्त
2-अधीर्गसूत्रम्=आलस्य से रहित
3-क्रियाविधिज्ञम्=कार्य को करने का तरीका जानने वाला
4-व्यसनेसुअसक्तम्= बुरी आदतों से दूर रहने वाला
5-शूरं= हिम्मत वाला (जोखिम उठाने वाला)
6-कृतज्ञम्=किये गये उपकार को मानने वाला
7-दृढ़सौहृदम्= सच्ची मित्रता वाला
8-लक्ष्मी= हर प्रकार की समृद्धि या दौलत

अतः स्वयं के विषय में, परिवार के विषय में, समाज और पूरी मानवता के विषय में और साथ ही आपको हर तरह का संसाधन उपलब्ध कराने वाली परमपूज्य 'प्रकृति' (हमारा पर्यावरण, इकोसिस्टम) के विषय में सकारात्मक दृष्टिकोण और सकारात्मक भाव से चिन्तन-मनन करते हुए

उपरोक्त सभी के कल्याण हेतु बिना किसी अपेक्षा के निम्नलिखित अभिप्रेरणा के साथ मृत्युपर्यन्त उद्यमशील बने रहें। अर्थात-

**सर्वेभवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया:।**
**सर्वे भद्राणि पश्यन्ति, मा कश्चिद दुख भागभवेत्।।**

"स्किल इंडिया" अभियान के पीछे हमारे देश के महामनीषी नीति-निर्माताओं की क्या भावनाएं और उद्देश्य निहित हैं, उसे थोड़ा ठहर कर गहन चिंतन-मनन के माध्यम से भली-भांति समझने की जरूरत है। यह अभियान एक दूरदर्शी अभियान है। इस अभियान के मूल में "बुद्धिरस्य बलं तस्य" की अभिप्रेरणा क्रियाशील है। इस अभियान के पीछे सद्गुणों और विभिन्न उपयोगी कलाओं (कौशलों) की सिखलाई (ट्रेनिंग) और उनके सतत् अभ्यास के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी श्रेष्ठ और सक्षम नागरिकों के निर्माण की भावना और प्रेरणा निहित है। एक अंग्रेजी कहावत **"Practice makes a man perfect."** से हम सभी भली-भांति परिचित हैं। इस कहावत का मूल भाव यही है, कि सद्गुणों और कौशलों के सतत् अभ्यास से ही कोई मनुष्य एक **'परिपूर्ण मानव'** बनता है। ऐसे सद्गुण और कला संपन्न स्त्री-पुरुष ही किसी समाज और देश के बहुमुखी विकास का मूल आधारस्तम्भ होते हैं। किसी समाज या देश में ऐसे कौशलयुक्त, सद्गुणों से परिपूर्ण स्त्री-पुरूषों की संख्या जितनी अधिक होगी, वह देश उतना ही समृद्ध और शक्तिशाली होगा। भारत देश के संदर्भ में हमारे देश के महान नीति-निर्माताओं की यही मूल भावना उपरोक्त वर्णित समस्त कार्यक्रमों और अभियानों के पीछे काम कर रही है।

*संत तुलसीदास जी के शब्दों में....*

**"कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस करहि सो तस फल चाखा"**

अर्थात इस संसार में कर्म ही प्रधान या प्रमुख है। जो जैसा करेगा, वैसा फल भी प्राप्त करेगा। इसलिए, कर्म को महत्व दो। कर्म को महत्व देकर ही हम **'विकसित भारत'** की परिकल्पना को साकार कर सकते हैं।

*महान दार्शनिक एवं दूरद्रष्टा संत तुलसीदास जी समस्त मनुदयों को आगाह करते हुए कहते हैं:-*

**"सकल पदारथ है जग माही, कर्महीन नर पावत नाही"।**

अर्थात जो मनुष्य या मानव समूह, कुशल (Skilled) और उद्यमशील प्रवृत्ति वाला नहीं होता, वह अपने आस-पास समस्त प्रकार के संसाधनों के होते हुए भी सदैव अभाव, प्रवंचन एवं शोषण का शिकार बना रहता है।

**अशोक कुमार गुप्ता**
सहा. आँकड़ा संसाधन
प्रबंधक (आई.टी.)
मो. 7318060852

# चला-चली श्री राम की नगरिया...
# (एक भोजपुरी गीत)

अयोध्या के कइला गुलजार हो, जय श्री राम जी की नगरी।
रामजी की नगरी हो रामजी की नगरी, जय श्री राम जी की नगरी।।

चला-चली राम के नगरिया, हिरदय में उठल लहरिया।
तरसन लागी मोरी अँखियाँ हो, घूम आयीं राम के नगरियाँ।।

बेकल जियरा राम गुन गाये, सुध-बुध खोये ध्यान लगाए।
रूप सुशोभित दरस जो पाए, राम चरण में फूल चढ़ाए,
तर जइहें हमरो जीनिगियाँ, हिरदय में उठल लहरियाँ।
चला-चली राम के नगरिया......।।

सजी रही अति सौन्दर्य दिशाएँ, अनुपम मंदिर भवन सजाएँ।
पावन मन से दीप जलाये, मोहिनी छवि अति सुन्दर भाये,
जुड़ल अइसन राम से पिरितियाँ, हिरदय में उठल लहरियाँ।
चला-चली राम के नगरिया......।।

मर्यादा आदर्श के स्वामी, ऋषि-मुनियों के परम् पुजारी।
पुरुषोत्तम श्रीराम दुलारे, जय श्रीराम हैं नाथ हमारे,
हमरों के देहदी आशीषियाँ, हिरदय में उठल लहरियाँ।
चला-चली राम के नगरिया......।।

रूप लुभावन, रंग सुहावन, मुख मंडल शोभे अति भावन।
भाल-मुकुट जिनके अति सोहे, अंबर धरती राम रस बरसे,
पायीं परमानन्द के अनुभूतियाँ, हिरदय में उठल लहरियाँ।
चला-चली राम के नगरिया......।।

रामराज सुखधाम हो जग में, राम सुमिरि भज अन्तर्मन में।
मधुर मनोहर रूप है प्यारा, गाँव शहर फैले उजियारा,
राम नाम जपि दिन-रतिया, हिरदय में उठल लहरियाँ।
चला-चली राम के नगरिया...... ।।

सोने की थाली में आरती उतारूँ, ढ़ोल-मृदंग और शंख बजाऊँ।
जय श्रीराम जी की आरती गाऊँ, मूरत देख नयनसुख पाऊँ,
लोगवा भजेला जय-जयकार हो, हिरदय में उठल लहरियाँ।
चला-चली राम के नगरिया...... ।।

अयोध्या के कइला गुलजार हो, जय श्री राम जी की नगरी।
जय श्री राम जी की नगरी, जय श्री राम जी की नगरी,
जय श्री राम।

(अर्थ- कइला-किया, बेकल- ब्याकुल, जीनिगियाँ-जिंदगी, जुड़ल अइसन-ऐसे जुड़ा हुआ, पिरितियाँ-प्रीत, पायीं-पाया हुआ, जपि-जपना)

| राजभाषा कार्यान्वयन संबंधित प्रश्नोत्तरी | | |
|---|---|---|
| **क्र. सं** | **प्रश्न** | **उत्तर** |
| 1. | संविधान के किस अनुच्छेद के अनुसार हिंदी संघ की राजभाषा है? | 343(1) |
| 2. | संविधान के किन अनुच्छेदों में राजभाषा का उल्लेख है? | 120,210,343 से 351 |
| 3. | राजभाषा के किस नियम के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर हिंदी में दिए जायेंगे? | नियम 5 |
| 4. | संसदीय राजभाषा समिति में लोकसभा के कितने सदस्य होते हैं? | 20 |
| 5. | संसदीय राजभाषा समिति में राज्यसभा के कितने सदस्य होते हैं? | 10 |
| 6. | कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली भाषायें कब आठवीं अनुसूची में शामिल की गईं? | 1992 |
| 7. | बोडो, मैथिली और संथाली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में कब शामिल किया गया? | 2004 से प्रभावी |

**शबीह अहमद**
वरिष्ठ यांत्रिक अभियंता
(परियोजना विभाग)
मो. 7318060444


# गज़ल

*हालात से निबाह किये जा रहे हैं हम।*
*पी कर के अश्क़-ए-ग़म भी जिए जा रहे हैं हम॥*

*दुनिया की हर जफ़ाएं या अपनों की बेरुखी।*
*हर दर्द को ख़ुशी से सहे जा रहे हैं हम॥*

*कल तक तो जानिसारों में अपना भी नाम था।*
*क्यूँ आज मुज़रिमों में गिने जा रहे हैं हम।।*

*आना हमारा तुझको अगर नागवार है।*
*महफ़िल से उठ के तेरी चले जा रहे हैं हम।।*

*है जुस्तुजू में तेरी बहुत राह खार ज़ार।*
*दामन बचा के अपना चले जा रहे हैं हम।।*

*इस दिन ने कब शिकायतों का रास्ता चुना।*
*हम तो सदा मुहब्बत ही किये जा रहे हैं हम।।*

*किसको बताएँ क्या गुज़रती है इस वजूद पे रातभर।*
*आँखों के राज़ ख़ुद ही सिये जा रहे हैं हम।।*

*"अहमद"!, करम की होगी नज़र हम पे भी एक दिन।*
*इस एक आसरे में जिए जा रहे हैं हम।।*

(*निबाह-निभाना, जफ़ाएं-अत्याचार, जानिसारों-जान न्योछावर करने वाले, राह खार ज़ार-काँटों से भरा रास्ता)

**जितेन्द्र कुमार**
आशुलिपिक
(राजभाषा विभाग)
मो. 7007400470

## मानव मस्तिष्क में नवाचार

मानव मस्तिष्क प्रकृति की अद्भुत कृति है। यह केवल सोचने समझने और निर्णय लेने भर का साधन नहीं, बल्कि नवाचार (Innovation) का सबसे बड़ा स्रोत भी है। मनुष्य के विकास की पूरी यात्रा-पहिए के आविष्कार से लेकर आधुनिक तकनीक तक मस्तिष्क की कल्पनाशक्ति, तर्क क्षमता और सृजनशीलता का परिणाम है।

**नवाचार की मूल जड़ेंः-** मस्तिष्क के भीतर अरबों न्यूरॉन और उनसे बनने वाले असंख्य संबंध (Connections) नई-नई संभावनाएँ उत्पन्न करते हैं। जब मनुष्य किसी समस्या पर सोचता है, पुराना अनुभव याद करता है और नए विचार जोड़ता है, तभी नवाचार जन्म लेता है। यानी नवाचार कोई अचानक घटने वाली घटना नहीं, बल्कि निरंतर मानसिक प्रक्रिया है।

**कल्पना और जिज्ञासा-नवाचार की ऊर्जाः-** मनुष्य का मस्तिष्क सहज रूप से जिज्ञासु है। “यह कैसे होता है?” और “ऐसा क्यों नहीं हो सकता?” जैसे प्रश्न नवाचार का प्रारंभिक बिंदु बनते हैं। कल्पना की शक्ति इन प्रश्नों में नयी दिशा देती है। यही कारण है कि बच्चे, जो अधिक कल्पनाशील होते हैं, अक्सर नए विचार तेजी से उत्पन्न करते हैं।

**अनुभव और सीख का योगदानः-** मस्तिष्क अनुभवों को केवल संग्रह नहीं करता, बल्कि उनका विश्लेषण करके नए निष्कर्ष निकालता है। जब किसी व्यक्ति के पास विविध अनुभव और ज्ञान होता है, तो उसका मस्तिष्क जटिल समस्याओं के नए समाधान आसानी से खोज सकता है। यही कारण है कि शोध, अध्ययन और प्रयोग नवाचार के लिए आवश्यक माने जाते हैं।

**नवाचार में भावनाओं की भूमिकाः-** आमतौर पर नवाचार को केवल बुद्धि का परिणाम माना जाता है, परंतु भावनाएँ भी इसमें महत्वपूर्ण भाग निभाती हैं। उत्साह, प्रेरणा और सकारात्मक सोच व्यक्ति को जोखिम लेने और नए प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। इसी तरह असफलता से सीखने की क्षमता भी नवाचार को आगे बढ़ाती है।

**आधुनिक युग और मस्तिष्क की संभावनाएँः-** आज के वैज्ञानिक युग में मानव मस्तिष्क अपनी क्षमताओं की चरम सीमा की ओर बढ़ रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, अंतरिक्ष अनुसंधान,

जैव प्रौद्योगिकी- ये सभी मस्तिष्क की सृजनात्मक शक्ति के विस्तार का प्रमाण हैं। जितना अधिक हम मस्तिष्क को चुनौती देते हैं, उतना ही वह नए विचारों का निर्माण करता है।

अतः मानव मस्तिष्क में नवाचार केवल तकनीक या आविष्कार तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में ज्ञान, कल्पना और अनुभव का संयोजन है। यही नवाचार मनुष्य को अन्य जीवों से अलग बनाता है और उसे निरंतर प्रगति की ओर ले जाता है। इसलिए मस्तिष्क को सक्रिय रखना, नई चीजें सीखना, और चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करना- नवाचार की मूल कुंजी है।

| राजभाषा कार्यान्वयन संबंधित प्रश्नोत्तरी | | |
|---|---|---|
| **क्र. सं** | **प्रश्न** | **उत्तर** |
| 1. | संसदीय राजभाषा समिति में कुल कितने सदस्य होते हैं? | 30 |
| 2. | संसदीय राजभाषा समिति अपना प्रतिवेदन किसे प्रस्तुत करती है? | राष्ट्रपति |
| 3. | 14 सितंबर को “हिंदी दिवस” मनाने की शुरुआत कब से हुई? | 1953 |
| 4. | “विश्व हिंदी दिवस” कब मनाया जाता है? | 10 जनवरी |
| 5. | केंद्रीय हिंदी समिति का अध्यक्ष कौन होता है? | प्रधानमंत्री |
| 6. | किसी कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति का अध्यक्ष कौन होता है? | कार्यालय प्रमुख |
| 7. | राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष कौन थे? | बी.जी. खेर |
| 8. | राजभाषा के किस नियम में प्रवीणता की परिभाषा दी गयी है? | नियम 9 |
| 9. | राजभाषा के किस नियम में कार्यसाधक की परिभाषा दी गयी है? | नियम 10 |
| 10. | कमलापति त्रिपाठी राजभाषा स्वर्ण पदक पुरस्कार किसे प्रदान किया जाता है? | महाप्रबंधक एवं उनसे ऊपर के स्तर के अधिकारियों को |
| 11. | संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए वार्षिक कार्यक्रम कौन तैयार करता है? | गृह मंत्रालय |
| 12. | संसदीय राजभाषा की कौन सी उप-समिति द्वारा रेल मंत्रालय एवं अधीनस्थ कार्यालयों का निरीक्षण किया जाता है? | दूसरी |

**आदित्य प्रकाश**
वरि. अनुभाग अभियंता
(एम & पी/यांत्रिक)
मो. 7525099337

## मंच संचालक का भाव

आरेडिका में आप आये हैं, स्वागत है आपका।
यह सौभाग्य हमारा कि, सत्कार करें हम आपका।।

करिए शुक्रिया, रेल मंत्रालय का।
दिल से करिए धन्यवाद, राजभाषा विभाग का।।

सौजन्य से जिसके, आज सजा ये मेला है।
किस्मत से सबको, यह मौका मिला है ,
'हिंदी की सेवा' का मौका मिला है॥

प्रतियोगिता, कार्यक्रम.. तो है बस एक बहाना,
मकसद तो है सिर्फ हमको मिलाना॥

सब रेलों के प्रतिनिधियों का एक जगह पर आ मिलना,
रंग-बिरंगे फूलों का जैसे एक गुलदस्ते में मिल जाना।।

यही रेल परिवार है, यही भारतीय रेल।
करवाती है मेल दिलों का, है ये भारतीय रेल।।

जीते कोई भी, या हारे कोई भी।
हमको तो मिलने का मौका मिला है।।
भाग्यशाली हैं हम कि हमें,
हिंदी की सेवा का मौका मिला है॥

ना गम को टटोलो ना खोजो खुशी को,
मुकद्दर से मिल जाए ले लो उसी को।।

कहो आप, कैसी रही मेजबानी,
शिकवा कोई हो, तो कह दो जुबानी।।

न हो दिल में शिकवा ये चाहत हमारी,
विदा हो खुशी से है ये आरजू हमारी।।

लिए याद मीठी, जब जाओ यहां से,
न भूलो हमें तुम, जब जाओ यहां से।
लिए याद मीठी, जब जाओ यहां से,
न भूलो हमें तुम, जब जाओ यहां से।।

**प्रियंका राणा**
कनिष्ठ लिपिक
(कार्मिक विभाग)
मो. 6291792191

## छोड़ जाऊँगी जो पीछे...

एक दिन मुझे जाना ही है।
मैं चली जाऊँगी कहीं दूर।।
उस दिन सब मुझे भूल जाएंगे।
शायद कोई याद करेगा ज़रूर।।

जाना तो एक दिन तय है।
फिर मैं क्यों सोचूँ इतना ?
इन हँसी से भरे पलों में।
क्यों देखती हूँ मैं पीछे इतना ?

मुझे नहीं पता कल क्या होगा ?
फिर भी मैं सोचती रहती हूँ।।
कल की बातें कल पर छोड़ दूँ।
आज बस मैं मुस्कुराती रहती हूँ।।

**शाबरा बेगम**
आशुलिपिक
(गुणवत्ता विभाग)
मो. 9910479686

## अकेलापन.. मनोवैज्ञानिक संकट या आत्मविकास का अवसर

मानव स्वभाव मूलतः सामाजिक माना जाता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य किसी-न-किसी रूप में समाज, परिवार, समुदाय अथवा मानवीय संबंधों से जुड़ा रहता है। किंतु इस सामाजिक अस्तित्व के भीतर एक वैकल्पिक अनुभूति भी मौजूद है-अकेलापन। अकेले रहना या "अकेलापन" (Loneliness) और "एकांत" (Solitude) दो भिन्न अवधारणाएँ हैं, लेकिन अक्सर लोग दोनों को मिलाकर देखते हैं। आधुनिक मनोविज्ञान बताता है कि अकेले रहने का अनुभव मनुष्य को मानसिक रूप से या तो अत्यंत कमजोर कर सकता है, या फिर उसे असाधारण रूप से आत्मनिर्भर, रचनात्मक और संतुलित बना सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति किस प्रकार अपने "अकेलेपन" को समझता, स्वीकारता और व्यवहार में रूपांतरित करता है।

यह लेख अकेले रहने के मनोविज्ञान का बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत करता है - इसकी परिभाषा, कारण, सकारात्मक-नकारात्मक प्रभाव, व्यावहारिक परिवर्तन, न्यूरोसाइंस, भारतीय दार्शनिक दृष्टि, तथा आधुनिक मनोविज्ञान में "अकेले रहना" दो स्तरों पर समझा जाता है।

**Loneliness — अनचाहा अकेलापन** यह वह स्थिति है जब व्यक्ति को लगता है कि उसे भावनात्मक, सामाजिक या मानसिक सहारा नहीं मिल रहा है। यह एक नकारात्मक अनुभव है।

**Solitude — स्वेच्छिक एकांत** जब व्यक्ति स्वयं अकेले रहने का चुनाव करता है, गहराई से सोचने, आत्म-चिंतन के लिए समय देने, रचनात्मक कार्यों के लिए जगह खोजने, या मानसिक शांति प्राप्त करने हेतु, तो इसे सकारात्मक एकांत कहा जाता है। मनोविज्ञान के अनुसार, अंतर इस बात में है, **अकेलापन हमें भीतर से तोड़ता है, एकांत हमें भीतर से जोड़ता है।**

**1. सामाजिक परिवर्तन** तेज़ी से बदलता शहरी जीवन, व्यस्त दिनचर्या, काम का दबाव, नौकरी या शिक्षा के लिए घर से दूर रहना- ये सभी अकेलेपन को बढ़ाते हैं।

**2. तकनीकी दुनिया और डिजिटल संबंध** सोशल मीडिया ने वर्चुअल जुड़ाव तो बढ़ाया है, लेकिन भावनात्मक निकटता कम कर दी। यह "connected but lonely" की स्थिति बनाता है।

**3. जीवन की परिस्थितियाँ**

- संबंधों में टूटन
- परिवार का बिखराव
- वृद्धावस्था
- बीमारी या विकलांगता
- नौकरी छूटना या आर्थिक समस्याएँ

**4. व्यक्तिगत प्रवृत्ति-** कुछ लोग स्वभाव से अंतर्मुखी (introvert) होते हैं और उन्हें एकांत ऊर्जा देता है।

**5. आत्म-विकास की आवश्यकता-** कुछ लोग स्वयं को खोजने, आत्मबोध या अध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए एकांत चुनते हैं।

**<u>मनोवैज्ञानिक प्रभाव: सकारात्मक और नकारात्मक</u>**

**(क) सकारात्मक प्रभाव**

**आत्म-चिंतन की क्षमता बढ़ती है-** अकेले रहने से व्यक्ति स्वयं से संवाद करता है। वह अपनी भावनाओं, इच्छाओं, भय, ताकत और कमजोरियों को बेहतर समझ पाता है।

**रचनात्मकता में वृद्धि-** मस्तिष्क की Default Mode Network (DMN) एकांत में सक्रिय हो जाती है। यही नेटवर्क कल्पना, विचार-निर्माण और समस्या समाधान को विकसित करती है।

कई महान वैज्ञानिक, लेखक और कलाकार- आइंस्टीन, बाख, कबीर, बुद्ध- एकांत में असाधारण कार्य करते थे।

**भावनात्मक स्वतंत्रता-** जो व्यक्ति स्वयं में पूर्णता पाता है, वह बाहरी प्रशंसा या आलोचना पर कम निर्भर होता है।

**निर्णय क्षमता मजबूत होती है-** अकेले समय बिताने वाला व्यक्ति कम भावनात्मक दबाव में रहता है, जिससे वह तार्किक निर्णय ले पाता है।

**आत्म-उपचार (Self-Healing)-** शांत वातावरण मानसिक तनाव और चिंता को कम करता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि “Solitude is a form of emotional detox.”

**(ख) नकारात्मक प्रभाव**

यदि अकेलापन अनचाहा हो या अत्यधिक हो जाए, तो इससे मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ सकते हैं।

**अवसाद और चिंता** लंबे समय तक सामाजिक संपर्क की कमी से हार्मोनल असंतुलन होता है, जो अवसाद, पैनिक अटैक और चिंता संबंधी विकारों को जन्म दे सकता है।

**आत्मविश्वास में कमी-** लगातार अकेले रहने से व्यक्ति यह मानने लगता है कि वह दूसरों के लिए महत्वहीन है।

**Overthinking-** अकेलापन हमें नकारात्मक विचारों के चक्र में फँसा देता है। "मैं पर्याप्त नहीं हूँ", "मुझे कोई नहीं समझता" जैसी भावनाएँ हावी होने लगती हैं।

**सामाजिक कौशल कमजोर पड़ना-** यदि लंबे समय तक मानव संवाद कम हो, तो व्यक्ति सामाजिक स्थितियों में असहज महसूस करने लगता है।

**शारीरिक प्रभाव-** अनुसंधान बताते हैं कि अकेलापन रक्तचाप बढ़ा सकता है, नींद में बाधा डाल सकता है और प्रतिरक्षा तंत्र को कमजोर कर सकता है।

**अकेले रहने में न्यूरोसाइंस की भूमिका-** मानव मस्तिष्क सामाजिक इंटरैक्शन की जरूरत महसूस करता है। जब व्यक्ति अकेला महसूस करता है, तब **Amygdala (भय केंद्र) सक्रिय हो जाता है** यह व्यक्ति को खतरे का अधिक तीव्र अनुमान कराता है। इसलिए अकेले लोग छोटे-छोटे मुद्दों पर भी अधिक डर या चिंता महसूस करते हैं।

**Oxytocin- 'Social Bonding Hormone' की कमी** इस हार्मोन की कमी भावनात्मक खालीपन पैदा करती है।

**Cortisol- तनाव हार्मोन बढ़ जाता है** लंबे समय तक बढ़ा हुआ Cortisol शरीर और मन दोनों को प्रभावित करता है।

**Reward System की कमजोरी-** मानव मस्तिष्क सामाजिक प्रशंसा या प्यार में Dopamine रिलीज करता है। अकेलापन इस सिस्टम को निष्क्रिय बना देता है।

**भारतीय दार्शनिक दृष्टि: एकांत की गरिमा-** भारतीय संस्कृति में "एकांत" का बड़ा महत्व रहा है। आध्यात्मिक परंपराओं में एकांत को **स्वानुभूति**, **ध्यान**, **आत्म-साक्षात्कार** और **मन की शुद्धि** का साधन माना गया।

**योग दर्शन में** पतंजलि योग सूत्र में "स्वाध्याय" और "एकाग्रता" के लिए एकांत आवश्यक बताया गया है।

**बौद्ध दर्शन में** बुद्ध ने कहा – **"जो स्वयं के सहारे चलता है, वह कभी अकेला नहीं होता।"** यह बताता है कि एकांत को सकारात्मक ऊर्जा में बदला जा सकता है।

संत कबीर का दृष्टिकोण-

**"साधु ऐसा चाहिए जैसा सूप सुसांत,**
**सार-सार को गहि रहे, थोथा देई उड़ांत।"**

यहाँ 'सूप' एकांत की उपमा है, जो अपने भीतर सार को रखता है और व्यर्थ को दूर करता है।

**क्या हर व्यक्ति अकेले रहने को एक जैसा अनुभव करता है?** नहीं। अकेले रहने का प्रभाव व्यक्ति की व्यक्तित्व-प्रवृत्ति (personality trait) पर निर्भर करता है।

**Introvert (अंतर्मुखी)**

- अकेलापन उनकी ऊर्जा बढ़ाता है
- वे एकांत में प्रफुल्लित रहते हैं
- रचनात्मक कार्यों में बेहतर प्रदर्शन

**Extrovert (बहिर्मुखी)**

- अधिक समय अकेले रहने से ऊर्जा घटती है
- वे जल्दी बेचैन या उदास हो सकते हैं

**Ambivert (मिश्र स्वभाव)**

- संतुलित समय अकेले और लोगों के साथ
- व्यक्तिगत परिस्थितियों पर निर्भर

**आधुनिक समाज में अकेलेपन की चुनौती-**

**तेज़ रफ्तार जीवन-** लोगों के पास भावनात्मक बातचीत के लिए समय कम है।

**Nuclear Families** परिवार का आकार छोटा होने से वृद्ध, विद्यार्थी और कामकाजी व्यक्ति अकेलापन अधिक महसूस करते हैं।

**करियर और प्रतियोगिता** सफलता की दौड़ में मानसिक संतुलन और संबंधों को कम महत्व मिलता है।

**डिजिटल लत (Digital Addiction)** AI और Social Platforms भावनात्मक रूप से गहरे संबंधों को प्रतिस्थापित नहीं कर सकते।

**अकेलापन संभालने के उपाय- मनोवैज्ञानिक दृष्टि**

**दिनचर्या बनाना-** जब मन खाली होता है, अकेलापन बढ़ता है। एक व्यवस्थित दिनचर्या सार्थकता देती है।

**सामाजिक संपर्क को धीरे-धीरे बढ़ाना-** छोटे-छोटे संवाद-जैसे सहकर्मियों से बात करना, क्लब में शामिल होना-मानसिक तनाव घटाते हैं।

**रचनात्मक कार्य** लेखन, चित्रकला, संगीत, बागवानी- ये गतिविधियाँ अकेले समय को सकारात्मक ऊर्जा में बदलती हैं।

**माइंडफुलनेस और ध्यान-** ये तकनीकें मन को केंद्रित करती हैं और नकारात्मक विचारों पर नियंत्रण बढ़ाती हैं।

**आभार प्रकट करना (Gratitude)-** मानसिक संतुलन को मजबूत करने में अत्यंत प्रभावी तकनीक है।

**आवश्यक हो तो परामर्श लेना-** यदि अकेलापन मानसिक कष्ट बन जाए, तो मनोचिकित्सक से सहायता लेना समझदारी है।

**अकेले रहने की कला-** negative loneliness से positive solitude तक हर व्यक्ति अपने अकेलेपन को सकारात्मक दिशा में मोड़ सकता है।

कैसे?

**खुद को स्वीकारें** अपने विचारों और भावनाओं से भागें नहीं।

**खुद को जानें** अकेले समय को "स्वयं की खोज" की प्रक्रिया बनाएं।

**लक्ष्य तय करें** लक्ष्य जीवन को दिशा देते हैं, और दिशा मानसिक स्थिरता लाती है।

**प्रकृति से जुड़ें** प्रकृति एक अद्भुत उपचारक है। जंगल, नदियाँ, पहाड़- ये मन को गहरे स्तर पर शांत करते हैं-

अकेले रहने की मनोविज्ञान हमें यह सिखाती है कि अकेलापन स्वयं में न अच्छा है न बुरा। यह इस पर निर्भर करता है कि हम इसे कैसे देखते और उपयोग करते हैं। यदि यह अनचाहा, अनियंत्रित और नकारात्मक है, तो यह मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा सकता है। लेकिन यदि अकेलापन आत्म-चिंतन, रचनात्मकता और आंतरिक विकास का माध्यम बन जाए, तो वही अकेलापन "एकांत" बनकर हमारे जीवन को गहराई देता है।आज की तेज़, डिजिटल और शोरगुल भरी दुनिया में **अकेले होने की क्षमता** (The Capacity to be Alone) एक महत्वपूर्ण कौशल बन चुकी है। यह हमें मजबूत बनाती है, आत्मनिर्भर बनाती है और अंदर से जोड़ती है।

**अंततः, अकेलापन हमें या तो तोड़ सकता है, या असाधारण रूप से गढ़ सकता है- यह चुनाव हमारा अपना होता है।**

**विनोद कुमार मौर्य**
वरिष्ठ अनुभाग अभियंता
(यांत्रिक विभाग)
मो. 7318060451

## तुमको दिल से नमन करता हूँ माँ
## (कविता)

---

त्याग, प्रेम और धैर्य की जीती जागती मूरत है माँ,
हमारे जीवन का दिल और आत्मा है माँ।
हर परेशानी का हल निकालने वाली शक्ति है माँ,
तुमको दिल से नमन करता हूँ माँ।

नौ माह पेट में रखकर, हर लाते सहती है माँ,
दुनिया में आते ही सबसे पहले खुश होती है माँ।
सारे दुख झेलकर बच्चे को खुश रखती है माँ,
दया और शक्ति की जीवंत प्रतिमूर्ति है माँ।
तुमको दिल से नमन करता हूँ माँ।

खुद भूखे रहकर बच्चों को खिलाती है माँ,
भूख न होने पर भी खिलाना जानती है माँ।
लोरी गाकर बच्चों को सुलाती है माँ,
हमारे सभी दुखों का मरहम है माँ।
तुमको दिल से नमन करता हूँ माँ।

परिवार जैसा भी हो संभालती है माँ,
हर ख्वाहिश को पूरा कराती है माँ।
निःस्वार्थ भाव से प्यार देती है माँ,
परिवार में खुशहाली लाती है माँ।
तुमको दिल से नमन करता हूँ माँ।

बच्चे की सलामती के लिए दुआ करती है माँ,
पहली शिक्षिका और पहली दोस्त होती है माँ।

संकट में सबसे पहले खड़ी होती है माँ,
सब कुछ सहती है फिर भी चुप रहती है माँ।
तुमको दिल से नमन करता हूँ माँ।

बच्चों की खुशियों के लिए, दुनिया से लड़ पड़ती है माँ,
बच्चों की मुस्कुराहट के लिए, कितना दर्द सहती है माँ।
हर बकवास को पहले सुनना पसंद करती है माँ,
घर में प्रवेश करते ही सबसे पहले स्वागत करती है माँ।
तुमको दिल से नमन करता हूँ माँ।

आपकी हर सीख समस्या का समाधान करती है माँ,
किसी भी जन्म में आपका कर्ज अदा न कर पाऊंगा माँ।
आपकी कृपा मेरे ऊपर सदा बनी रहे माँ,
आपके चरणों में मेरा सिर झुका रहे माँ।
तुमको दिल से नमन करता हूँ माँ।

कहाँ तो तय था चराग़ाँ हर एक घर के लिये
कहाँ चराग़ मयस्सर नहीं शहर के लिये

यहाँ दरख़्तों के साये में धूप लगती है
चलो यहाँ से चले और उम्र भर के लिये

न हो क़मीज़ तो घुटनों से पेट ढक लेंगे
ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफ़र के लिये

ख़ुदा नहीं न सही आदमी का ख़्वाब सही
कोई हसीन नज़ारा तो है नज़र के लिये

## दुष्यंत कुमार

| | |
|---|---|
| **जन्म** | 01 सितम्बर 1933 |
| **निधन** | 30 दिसम्बर 1975 |
| **जन्म स्थान** | राजपुर नवाडा गांव, जिला बिजनोर, उत्तर प्रदेश, भारत |
| **कुछ प्रमुख कृतियाँ** | |
| सूर्य का स्वागत; आवाज़ों के घेरे; जलते हुए वन का वसन्त (सभी कविता संग्रह)। साये में धूप (ग़ज़ल संग्रह)। एक कण्ठ विषपायी (काव्य-नाटिका) | |

## आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली में हिंदी पखवाड़ा-2025 का आयोजन

### 1.0 हिंदी दिवस-2025 का शुभारंभः

हिंदी दिवस तथा 5वां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का संयुक्त आयोजन **दिनांक 14 एवं 15 सितंबर, 2025 को महात्मा मंदिर कन्वेंशन एवं एग्जिबिशन सेंटर, गांधीनगर, गुजरात** में संपन्न हुआ जिसमें आधुनिक रेल डिब्बा कारख़ाना, रायबरेली द्वारा सक्रिय सहभागिता की गई तथा इसी अवसर पर हिंदी दिवस-2025 का औपचारिक शुभारंभ किया गया।

आरेडिका में हिंदी पखवाड़ा-2025 का शुभारंभ **दिनांक 17.09.2025 को संपन्न 'राजभाषा कार्यान्वयन समिति' की त्रैमासिक बैठक** के साथ किया गया। बैठक में महाप्रबंधक श्री प्रशांत कुमार मिश्रा द्वारा माननीय रेल मंत्री जी का 'हिंदी दिवस संदेश' वाचन किया गया, जिसके उपरांत विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों की शृंखला का विधिवत शुभारंभ हुआ।

### 2.0 विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजनः

**(हिंदी पखवाड़ा-2025 कार्यक्रम का बैनर)**

**3.0**हिंदी पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत आरेडिका में विविध प्रतियोगिताओं एवं गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिनका उद्देश्य कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग, प्रसार एवं संवर्धन के प्रति उत्साह जागृत करना था। प्रतियोगिताओं में हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, हिंदी वाक् एवं कार्यक्रमों में नुक्कड़ नाटक, सांस्कृतिक संध्या एवं कवि सम्मेलन तथा पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित किए गए।

| | |
|---|---|
| | **हिंदी निबंध प्रतियोगिता का विषय “स्वच्छ भारत–स्वस्थ भारत” अथवा “हिंदी दिवस का महत्व और हमारी जिम्मेदारी” (कर्मचारियों के लिए)** |
| | **“आरेडिका की पर्यावरणीय जागरूकता और समाज में उसका प्रभाव” अथवा “विश्व पटल पर हिंदी के बढ़ते कदम” (अधिकारियों के लिए)** |
| | **हिंदी वाक् प्रतियोगिता का विषय “कार्यालय में हिंदी कार्य: अवसर या बाधा” तथा “मोबाइल – दोस्त या दुश्मन (जे.ए. ग्रेड तक के अधिकारियों एवं समस्त अराजपत्रित कर्मचारियों के लिए)** |

‘हिंदी हैं हम’ विषय पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य हिंदी की एकता, महत्ता एवं राष्ट्रीय पहचान का सशक्त संदेश प्रस्तुत करना था।

कार्मिकों की कार्यालयी लेखन कौशल को परखने के लिए हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार में रंगमंच और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की अहम भूमिका होती है, इसी उद्देश्य से सांस्कृतिक संध्या एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में महाप्रबंधक महोदय श्री प्रशांत कुमार मिश्रा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में अध्यक्ष महोदया, महिला कल्याण संगठन, आरेडिका उपस्थित थीं। प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रशस्ति पत्र एवं नकद पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया।

## 4.0 आरेडिका की त्रैमासिक पत्रिका 'प्रगति' के सितंबर-2025 अंक का विमोचन:

आरेडिका की त्रैमासिक पत्रिका ***'प्रगति'*** के सितंबर-2025 अंक का विमोचन महाप्रबंधक महोदय श्री प्रशांत कुमार मिश्रा एवं प्रधान विभागाध्यक्षों की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया।

*'प्रगति' पत्रिका का विमोचन करते महाप्रबंधक महोदय एवं अन्य*

*'प्रगति' पत्रिका का कवर पेज*

## 5.0 साहित्यिक व्याख्यान एवं कार्यशाला

**5.1 'मलिक मुहम्मद जायसी- प्रेम की पीर के कवि'** विषय पर **साहित्यिक व्याख्यान** का आयोजन **दिनांक 23.09.2025** को किया गया, जिसमें अतिथि वक्ता के रूप में डॉ. सुरेश कुमार सैनी, प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त (से.नि.), रे.सु. बल ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से बड़े ही रोचक अंदाज में मलिक मुहम्मद जायसी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए यह सिद्ध किया कि निश्चित रूप से 'जायसी' 'प्रेम की पीर' के कवि हैं।

*व्याख्यान देते डॉ. सैनी, प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त (से.नि.)*

*साहित्यिक व्याख्यान का बैनर*

**5.2 'हिंदी भाषा का प्रयोग और संभावनाएं'** विषय पर एक और **साहित्यिक व्याख्यान** का आयोजन **दिनांक 24.09.2025** को किया गया। अतिथि वक्ता के रूप में डॉ. चम्पा श्रीवास्तव, पूर्व विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य फीरोज़ गाँधी कॉलेज, रायबरेली तथा अधिष्ठाता (Dean) कला संकाय, कानपुर विश्वविद्यालय आमंत्रित थीं।

*अतिथि वक्ता डॉ. चम्पा श्रीवास्तव*
*(पूर्व विभागाध्यक्ष, फीरोज गांधी कॉलेज, रायबरेली)*

*साहित्यिक व्याख्यान का बैनर*

**5.3 "हिंदी भाषा का आधुनिकीकरण एवं मानक स्वरूप"** पर **हिंदी कार्यशाला** का आयोजन **दिनांक 25.09.2025** को किया गया। कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित डॉ. आजेन्द्र प्रताप सिंह, असि. प्रोफेसर, फीरोज गांधी कॉलेज, रायबरेली ने बताया कि हिंदी को कैसे आधुनिक स्वरूप मिला एवं हिंदी भाषा ने समय के साथ-साथ अपने पारंपरिक स्वरूप से आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप कई बदलाव और रूपांतरण किए हैं।

*अतिथि वक्ता को स्मृति चिह्न भेंट करते उप मुराधि*

*साहित्यिक व्याख्यान का बैनर*

**5.4 'महर्षि पतंजलि का राजयोग- मानसिक शांति, आत्म अनुशासन एवं जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति'** विषय पर व्याख्यान का आयोजन **दिनांक 26.09.2025** को किया गया, जिसमें अतिथि वक्ता श्री रमेश चन्द्र, महानिरीक्षक-सह-प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी, आरेडिका थे। व्याख्यान में आरेडिका एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायबरेली के सदस्य कार्यालय आमंत्रित थे।

*व्याख्यान में सहभागिता करते आरेडिका के कर्मचारीगण एवं अधिकारीगण*

*व्याख्यान का बैनर*

**6.0 'पुस्तक/साहित्य प्रदर्शनी'** का आयोजन **दिनांक 26.09.2025 एवं 27.09.2025** को किया गया, जिसमें हिंदी साहित्य, वेदों, राजभाषा संबंधी प्रकाशन एवं भारतीय संस्कृति पर आधारित पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया। कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन कर समृद्ध साहित्य से परिचय प्राप्त किया।

*मुख्य राजभाषा अधिकारी पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए*

*पुस्तक/साहित्य प्रदर्शनी का बैनर*

**भावना**
मुख्य कार्यालय अधीक्षक
परियोजना
मो. 7405854559

## भाषा हिंदी है भारत की..

*ओस की बूदों जैसी, शक्कर की मिठास जैसी,*
*जो घोल दे सब के मुख पर मुस्कान।*
*वो भाषा हिंदी है भारत की , वो भाषा हिंदी है भारत की।।*
*भाषाओं की दुनिया बहुरंगी है, इन सभी रंगो को समेटकर,*
*जो अनेकता को एकता में पिरो दे, वो भाषा हिंदी है भारत की।*
*सभी धर्म, जाति और भेदभाव को मिटाकर,*
*जो बांधे सबको एक डोर में, वो भाषा हिंदी है भारत की।।*
*फूलों-सी महकती स्वरों के संगीत-सी सुरीली,*
*बहुरूपता की सूत्राधार वो भाषा हिंदी है भारत की।।*
*असंख्य भाषाओं और बोलियों को अपने साथ मिलाते हुए,*
*जो एक रंग में ढल जाये, वो भाषा हिंदी है भारत की।।*
*कोयल के मधुर संगीत जैसी चाँद पर लगी बिंदी जैसी,*
*हर भाषा को सगी बहन मानती वो भाषा हिंदी है भारत की।।*
*जीवन की रेखा है हिंदी, हिन्दुस्तान की शान है हिंदी,*
*जटिलता को सरलता में बदल दे, वो भाषा हिंदी है भारत की।।*
*जन-जन की अभिलाषा है हिंदी प्यारे देश की भाषा है हिंदी,*
*मजबूती से जोड़े जो पूरे देश को, वो भाषा हिंदी है भारत की।।*

*हमारे देश की राष्ट्रीय भाषा और गौरव गाथा है हिंदी,*

*ज्ञान और व्याकरण की नदियों को मिलाकर एक स्रोत बना दे,*

*वो भाषा हिंदी है भारत की, वो भाषा हिंदी है भारत की।।*

*आम के मिठास जैसी हिन्दुस्तान के बाग की बहार है हिंदी,*

*जो दे आंखों को हरियाली-सा सुकून, वो भाषा हिंदी है भारत की।।*

*तत्सम-तद्भव देशी-विदेशी, सब रंगों को मिलाये,*

*वो भाषा हिंदी है भारत की, वो भाषा हिंदी है भारत की।।*

वर्तमान और आधुनिकता एवं तकनीकी के युग में हिंदी अपनी पहचान खोती जा रही है। इसलिये यह हमारा कर्तव्य है कि केवल 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में हिंदी को ना याद करके इसको हर दिन अपने जीवन में अपनायें और दैनिक जीवन मे हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करें, और इसके प्रचार प्रसार में अपनी सहभागिता अदा करें। आइये मिलकर संकल्प करें कि हिंदी को अपनी प्रथम प्राथमिकता प्रदान करेंगे।

ऊँचाई के शिखर तक हिंदी को पहुचाना है, हिंदी को अपनी प्राथमिकता बनाना है।

जय हिन्द, जय हिन्दी, जय भारत।

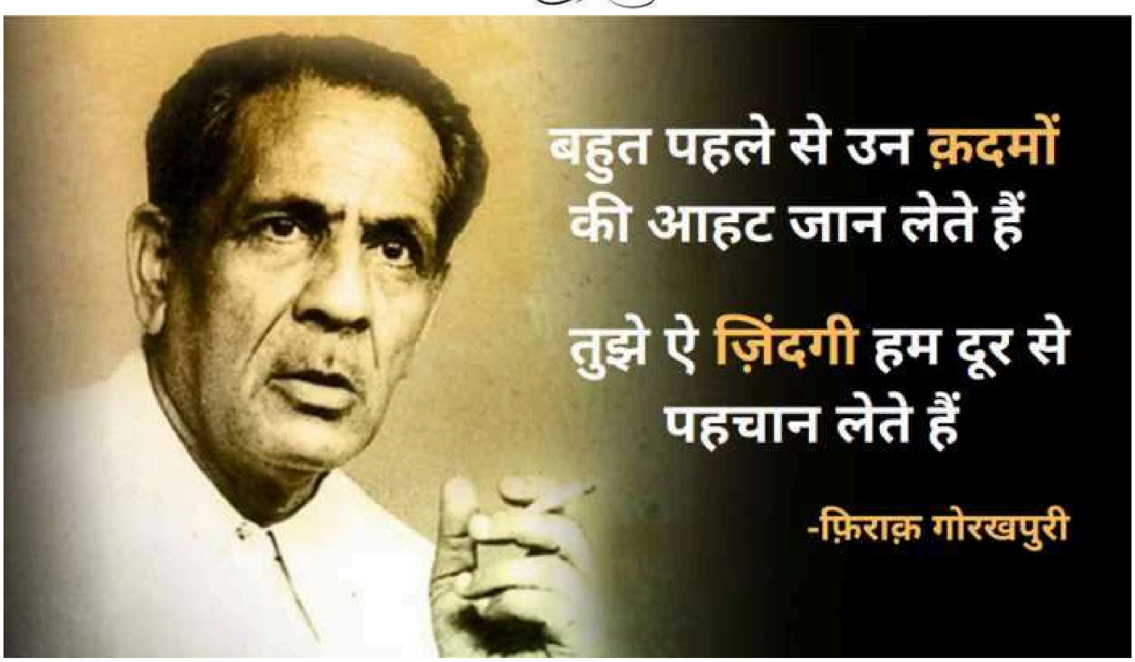

**सीतेश कुमार शर्मा**
तकनीशियन-I
ह्वील शॉप
मो. 8969110624

# सलामत रहे "कलाम"

*पढ़ो लिखो, बनो कलाम।*
*खेलो कूदो, बनो सचिन,*
*देश के गौरव, देश के शान,*
*हमारे दोनों महान।।*

दुनिया की नज़र में कलाम जी की पुस्तक मात्र एक पुस्तक है। लेकिन जब आप उसे पढ़ते और समझते हैं एहसास होता है कि वही पुस्तक दुनिया और ब्रह्मांड की खोज का विश्वसनीय रास्ता है। मैं, सितेश कुमार शर्मा, कलाम जी के विराट व्यक्तित्व को शब्द देने की कोशिश तो कर रहा हूँ, पर सच कहूँ तो कलम छोटी पड़ जाती है और कलाम जी का व्यक्तित्व बड़ा हो जाता है। उनकी सादगी ही भारत की पहचान थी और उनकी महानता, विश्व की पहचान।

"कलाम जी के व्यक्तित्व का एक अद्भुत गुण था- **मातृभाषा से प्रेम"**।

एम.आई.टी. के अंतिम वर्ष में उनकी टीम को एक निकट युद्ध विमान (Close-Combat Aircraft) के डिज़ाइन का कार्य सौपा गया। इसमें वायुगतिकी-एरोडायनेमिक्स का सबसे महत्वपूर्ण भाग कलाम जी के हिस्से आया। उनके डिजाइन शिक्षक प्रोफेसर श्रीनिवासन, जो उस समय एम.आई.टी. के निदेशक भी थे, उन्होंने इस विशाल कार्य के लिए मात्र तीन दिन की समय सीमा निर्धारित की, और चेतावनी दी कि यदि काम अधूरा रहा, तो कलाम की छात्रवृत्ति रोक दी जाएगी। छात्रवृत्ति ही तो कलाम की प्राणशक्ति थी।

वे दो दिनों तक भूखे प्यासे, निरंतर काम में जुटे रहे और समय सीमा के भीतर डिजाइन पूरा कर दिया। परिणाम यह हुआ कि प्रोफेसर श्रीनिवासन न केवल संतुष्ट हुए बल्कि कलाम की प्रतिभा पर गर्व महसूस किया।

समय पर परियोजना पूरी करने के बाद उनके पास कुछ समय बच गया। इसी अवधि में तमिल संगम साहित्य संस्थान ने एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया था। कलाम जी को अपनी

मातृभाषा तमिल उसकी प्राचीनता, उसकी वैज्ञानिकता और उसकी अद्‌भुत अभिव्यक्ति क्षमता पर अपार गर्व था।

इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने "**आइये, अपना विमान स्वयं बनाइये**" शीर्षक से एक निबंध लिखा।

पहले ही प्रयास में यह निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। यह बात साबित करती है कि प्रतिभा भाषा की मोहताज नहीं होती।

अंग्रेजी माध्यम में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद, उनके भीतर मातृभाषा तमिल के प्रति आदर अटूट था। तमिल में निबंध लिखने पर उन्हें न कभी हीनभावना हुई न किसी बाहरी भाषा के प्रभाव ने उनके मन को डिगने दिया। आज अंग्रेजी माध्यम के अंधानुकरण के बीच, यह संदेश हम सबके लिए अत्यंत प्रेरणादायक है- **इंसान चाहे जितना ऊँचा उठ जाए, अपनी जड़ों को कभी नहीं भूलना चाहिए।**

जीवन की पहली सीढ़ी मातृभाषा हमें न केवल सफलता तक पहुंचाती है, बल्कि भीतर से आत्मसंतोष भी प्रदान करती है।

मातृभाषा तमिल के साथ-साथ, **राजभाषा हिन्दी** के प्रति भी कलाम जी के मन में समान आदर था। भाषा उनके लिए केवत अभिव्यक्ति का साधन नहीं, बल्कि संस्कार, संस्कृति और राष्ट्र से जुड़ने की कड़ी थी।

कलाम जी का बचपन यह सीख देता है कि अभिभावक बच्चों के संस्कार, संस्कृति, जीवन-मूल्य चरित्र, आदतों की सात्विक सुद्दढ़ता प्रदान करती है, ताकि जीवन के मैदान में बच्चा खेल में खेल भावना से भाग ले, हार में हारे नहीं, जीत में अभिमान न करे, बच्चे भी अभिभावकों के अनुशासन को दण्ड, सजा जेल नहीं समझे, समय का सदुपयोग, संसाधनों की अधिकतम उपयोगिता, अनुशासन सब कुछ बचपन में एक बार सीख लिया तो पूरी उम्र जीवन के हर पड़ाव पर बचपन की सीख काम आयेगी।

हम सब के महान मिसाइलमैन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 को धनुषकोडी गाँव (रामेश्वरम्, तमिलनाडु) में एक मध्यम वर्ग परिवार में "अब्दुल कलाम जी" का जन्म हुआ। इनके पिता जैनुलाब्दीन न अधिक पढ़े-लिखे थे, न ही पैसे वाले थे, इनके पिता मछुआरों को नाव किराए पर दिया करते थे, अपनी आत्मकथा **'अग्नि की उड़ान'** में कलाम जी ने स्वयं लिखा है- "मेरे पिता आडम्बरहीन थे, पर घर में सभी आवश्यक वस्तुएँ समुचित मात्रा में उपलब्ध रहती थी। वास्तव में कलाम जी का बचपन बहुत ही निश्चिन्तता और सादेपन में बीता। उनके बचपन में समुचित विकास हेतु स्नेही वातावरण द्वारा प्रदत्त भावनात्मक निश्चिन्तता एवं

सादगी द्वारा भौतिक निश्चिन्तता प्रभावी आधारशिला बनाती है, साथ ही उन्हें बौद्धिक प्रेरणा एवं धार्मिक वातावरण का श्रेय मिला।

कलाम जी के बचपन में उनके संयुक्त परिवार में अनुशासन, धैर्य, सामंजस्य प्यार, इबादत सब कुछ जानने-सीखने को मिला। किसी भी इन्सान के बचपन की सशक्त नींव एक मजबूत आधार होती है। जीवन में "कलाम जी" ने जिन ऊँचाइयों को छुआ, उनमें उनके परिवार के मूल्य, संस्कृति का अमूल्य योगदान रहा, शिक्षा के प्रति लगाव एवं देश सेवा के बीज उनके माता-पिता ने बचपन में ही बो दिए थे।

मैं इस महान पुण्य-भूमि में, खोद गया एक कुआँ,
देखूँ अनगिनत बच्चे, खींचते पानी मुझमें जो,
कृपा की उस परवर-दिगार ने, जो सींचते फूल, पौधे और फसलें,
नया दौर, नई नस्लें, दूर-दूर तक, नियामत मेरे खुदा की।।

कलाम जी के बचपन से यह सीख मिलती है कि जहाँ तुम जा रहे हो, उसके बारे में जानों, दुनिया में यह जानना उतना महत्वपूर्ण नहीं है कि हम कहाँ जा रहे हैं? किस दिशा में जा रहे हैं? यह अधिक महत्वपूर्ण जानना कि हम इस समय कहाँ खड़े हैं? दिशा वही सही चुन सकता है, जो अपने वर्तमान स्थान और परिस्थितियों को स्पष्ट रूप से पहचानता हो।

वे हमेशा कहते थे कि **गरीब होना कमजोरी नहीं है, लेकिन हीन भावना रखना सबसे बड़ी कमजोरी है**। जीवन की कठिनाइयाँ कोई अभिशाप नहीं बल्कि वे ही हमारे भीतर की शक्ति को उजागर करती है। हताशा को स्थान दिए बिना संघर्ष करते रहना ही आगे बढ़ने का मार्ग है।

कलाम जी के पिता का एक अमूल्य संदेश था- "सूरज की छाँव में अच्छे और बुरे दोनों तरह के लोग खड़े रहते हैं। जैसे किसी कपड़े में सफेद और काले धागे साथ-साथ चलते हैं- अगर एक धागा टूट जाए तो पूरा कपड़ा प्रभावित होता है और इसे सुधारने के लिए करघे से लेकर जुलाहे तक को मेहनत करनी पड़ती है"।

मेरा मानना है कि अमावस्या की काली रात में घबराएँ नहीं, हर माह पूर्णिमा भी तो आती है, दूसरों की नकल न करें, भीड़ का हिस्सा न बने, स्वयं अपने विवेक से निर्णय ले। मार्गदर्शक एवं माता-पिता से सलाह ले, हम सब सूर्य नहीं बन सकते, पर एक दीपक तो बन ही सकते हैं। एक मोमबत्ती भी अंधेरे कमरे में रोशनी कर देती है।

अंत में मैं डॉ. कलाम जी के विषय में यही कह सकता हूँ- डॉ. कलाम जी का जीवन दर्शन था- "गिलास आधा भरा है, आधा ही नहीं पूरा भरा है, आधा पानी से, आधा हवा से, पूरा भरा ही नहीं छलक रहा है, हमारे अच्छे कर्मों से"।

कलाम जी का कहना था कि प्रतिदिन सुबह उठकर पाँच वाक्य स्वयं से अवश्य बोले-

1. मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ।
2. मैं कर सकता हूँ।
3. ईश्वर मेरे साथ है।
4. मैं विजेता हूँ।
5. आज मेरा दिन है।

कलाम जी का मानना था कि जैसी सोच रखोगे, वैसा ही बनोगे। ईश्वर हर प्रार्थना का उत्तर देता है, आस्था, आशा, विश्वास से हर समस्या का समाधान मिलेगा। जो मिला है, ईश्वर का प्रसाद मानकर ग्रहण करो, प्रयास करना मत छोड़ो।

ईश ने नहीं कहा कि दूँगा, सदा स्वच्छ नीला आकाश।
फूल भरी राहें जीवन भर, बिन बादल और बिन बरसात।
बिन दुःख के आनंद न होगा, और न शांति बिन प्रलाप।।

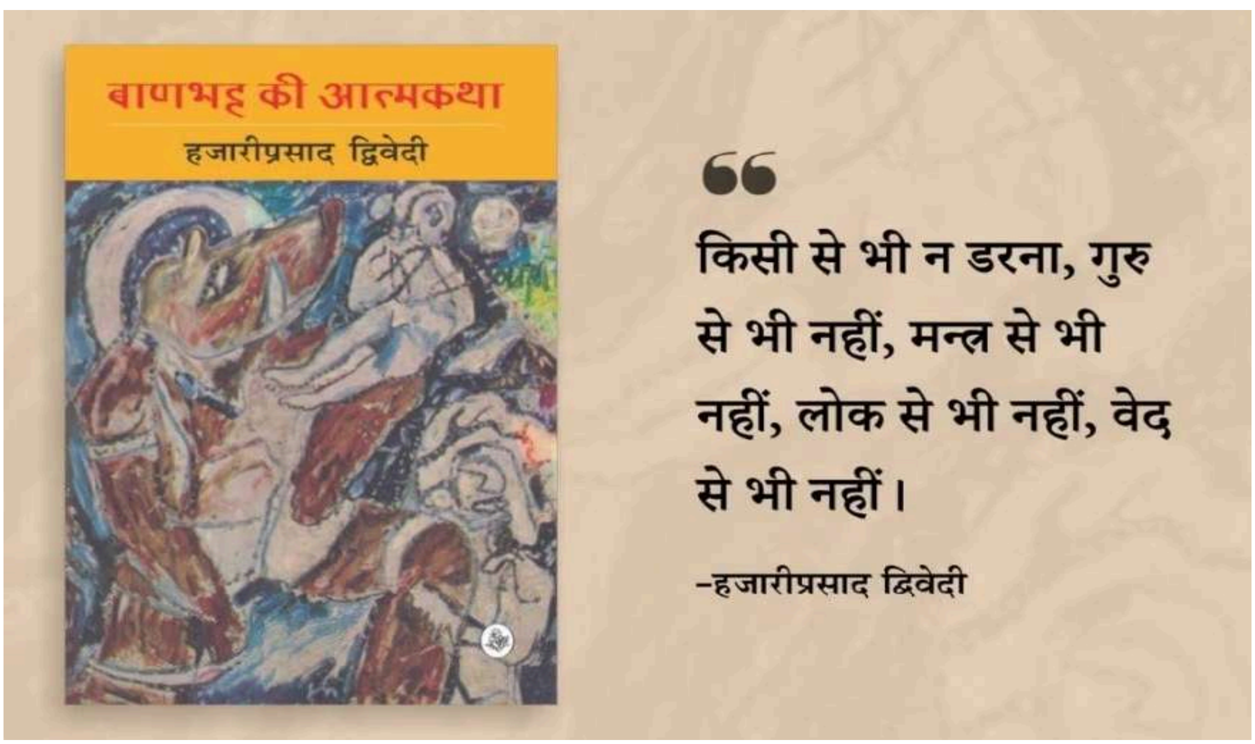

**सौरभ सचान**
दूरसंचार अनुरक्षक
(दूरसंचार विभाग)
मो. 9026043793

## व्यक्तिवादिता से बिखरते परिवार

ऐसा माना जाता है कि सृष्टि के प्रारंभ में ईश्वर ने इच्छा व्यक्त की होगी- “एकोहं बहुस्याम” अर्थात् ‘मैं एक हूँ, लेकिन कई हो जाऊं’। शायद इसी इच्छा का विस्तार ही ‘परिवार’ के आविर्भाव का आधार बना, और शायद यही कारण है कि हमारी संस्कृति में सदा से ही इस सम्पूर्ण जगत को एक परिवार माना गया, जो “वसुधैव कुटुम्बकम्” के रूप में अभिव्यक्त होता है।

परिवार के भाव का जो विस्तार भारत भूमि पर हुआ, वह अन्यत्र कहीं न हो सका। दरअसल भारत में परिवार का भाव, लोगों के साथ रहने के अतिरिक्त, रिश्तों की मजबूत डोर, सहयोग का अटूट बंधन, एक-दूसरे की सुरक्षा का वादा, एक-दूसरे के प्रति कर्तव्य, अनुशासन, मर्यादा, त्याग, समर्पण जैसे भावों से जुड़ा है।

ये वह मूल्य है जिनसे व्यक्ति में भावनात्मक संबल, आर्थिक सुरक्षा, वैचारिक परिपक्वता, मानसिक शांति, उन्नति, जैसे गुण विकसित होते हैं। जबकि पश्चिमी देशों में परिवार का मतलब पति-पत्नी एवं बच्चों भर तक ही सीमित है, वह भी एक निश्चित समयावधि तक।

दुर्भाग्य से पश्चिमी सभ्यता-संस्कृति और चलन, के अंधानुकरण के दौर में परिवार की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो रही है। दरअसल बाजार के बढ़ते प्रभुत्व, दिखावा एवं औपचारिकता में ढ़लते संस्कार, मूल्य, नैतिकता, प्रथाएँ, मनुष्य की प्राथमिकताओं से खिसकते जा रहे हैं। इनका स्थान ऐशो-आराम, पैसा, दिखावा, भौतिकतावादी, जीवनशैली ने ले लिया है, जिसके कारण समाज सामूहिकता से एकात्मकता की तरफ अग्रसर है, जिसके कारण परिवारों का विखण्डन लगातार जारी है, परिवार अब ‘सकल’ से ‘एकल’ की तरफ बढ़ रहे हैं।

यद्यपि एकल परिवार भौतिक रूप से सम्पन्न हो सकता है- रुपया-पैसा, नौकर-चाकर सभी सुख सुविधाएँ हो सकती हैं, परन्तु उनके जीवन में भय, असुरक्षा की भावना, भावनात्मक संबल, वैचारिक परिपक्वता, मानसिक शान्ति नहीं होती, इसी कारण आपने सुना होता कि ज्यादातर आत्महत्याएँ एकल परिवार के मुखिया ही करते हैं। इसलिए यहआवश्यक हो जाता है कि हम संयुक्त परिवार में परस्पर सहअस्तित्व की भावना से जीवनयापन करें।

**वसीम रज़ा इदरीसी**
तकनीशियन
(विद्युत गुणवत्ता)
मो. 8124241305

## अधूरी सी है जिंदगी...

नहीं होते हो तुम, फिर भी होते हो तुम,
न जाने क्यूँ, हर वक्त महसूस होते हो तुम।
अगर तुम अजनबी थे, तो लगे क्यूँ नहीं,
और अगर तुम मेरे थे, तो मुझे मिले क्यूँ नहीं।
ये लाज़मी तो नहीं कि, तुझे आँखों से ही देखूँ,
तेरी याद आना भी, किसी दीदार से कम नहीं।
एक सुकून-सा है, तेरी बातों में जब भी बात होती है,
सालों बाद भी अगर मिलूँगा तुझसे, तब भी यही कहूँगा, प्यार है तुमसे।
अधूरा ही सही, पर मैंने तुझे पाया तो है,
ऊपर वाले ने नहीं लिखा है तुझे, मेरे नसीब में
मुझे मिलना है तुमसे उस जहाँ में,
जहाँ बिछड़ने का रिवाज़ न हो।
काश! कि दिल अपने इख्तियार में होता,
न किसी की याद आती, न किसी से प्यार होता।
सोचता हूँ कि तुम्हें इतना याद ना करूँ,
लेकिन आँखे बंद करते ही इरादा बदल जाता है।
तुमसे मिलना तो एक ख़्वाब-सा लगता है,
ये जानता हूँ पर क्या करूँ, मजबूर हूँ दिल से।
दो दिन की जिंदगी है तू मुझे नाराज़ न कर,
अगर मैं तुमसे प्यार माँगू, तो इन्कार न कर।
वह जिन्दगी ही क्या, जिसमें तुम न हो,
वह खुशियाँ ही क्या, जिसमें तुम्हारी बात न हो।

तेरे इंतजार में जिंदगी गुजारी है,
तेरे एहसास से जिंदगी गुजारी है।

तुम मेरे पास नहीं हो फिर भी,
तुम्हारी याद से जिंदगी गुजारी है।

कभी तूने भी याद किया होगा मुझे,
मैं उन लम्हों से जिंदगी गुजारी है।

हकीकत में तो तू कभी मिलेगी नहीं, ये मालूम है,
इसलिए ख्वाब में तुझसे मिलकर हाल-ए-दर्द बयाँ करूँगा।

इश्क और मुहब्बत की रिवायत भी अजीब है,
तुझे पाना भी नहीं है, और तुझे खोना भी नहीं है।

तुम याद नहीं करते, और हम भुला नहीं सकते,
तुम मुझे हँसा नहीं सकती, और हम रुला नहीं सकते।

इतनी खूबसूरत मुहब्बत की यादे हैं मेरी,
तुम जान नहीं सकती, और हम बता नहीं सकते।

तुम अगर खुश हो तो वहीं बात काफी है मेरे लिए,
तुझे जीत हो मुझसे, और मेरी हार मुक़म्मल हो।

तुम मुहब्बत भी मासूम की तरह निभाती थी,
कभी बरसती थी, तो कभी एक बूँद के लिए तरसाती थी।

मत पूछ कैसे गुजरती है हर पल तेरे बिना,
कभी बात करने की हसरत, कभी देखने की तमन्ना है।

मेरा दिल बड़ी बेबश चीज़ है, देखता सबको है,
पर मेरी नज़र ढूँढ़ता सिर्फ तुझी को है।

दिल करता है तुम्हें जी भर के देखूँ,
पर मसला यह है कि जी भरेगा कब ?

तू मेरा हो जा और मुझे मुकम्मल कर दे,
या मुझे भुला दे, और इन्कार मुकम्मल कर दे...

**नवल किशोर यादव**
तकनीशियन-III
(यांत्रिक विभाग)
मो. 8804151209

## एक नारी...

एक नारी को देखा मैंने,
बड़ी शांत स्वभाव भरी,
रँगी सुनहले रंग में थी,
चेहरे पर मुस्कान पड़ी।

एक नारी को देखा मैंने,
सुन्दर मुख में आवाज भरी,
किया जग को रौशन,
स्वर्ण शब्दों की बौछार पड़ी।

एक नारी को देखा मैंने,
सुन्दर सुसज्जित अलंकार भरी,
हुई दुनिया में हलचल,
सभ्यता और संस्कृति की पहचान पड़ी।

एक नारी को देखा मैंने,
जिसने दुनिया में जीवन भरी,
जन्म दिया सन्तान को,
जग में नए जीवन की रौशन पड़ी।

हाड़ जलै ज्यूँ लाकड़ी, केस जले ज्यूँ घास।
सब तन जलता देखि करि, भया कबीर उदास॥

हे जीव, यह शरीर नश्वर है। मरणोपरांत हड्डियाँ लकड़ियों की तरह और केश घास (तृणादि) के समान जलते हैं। इस तरह समस्त शरीर को जलता देखकर कबीर उदास हो गया। उसे संसार के प्रति विरक्ति हो गई।

**सौरभ कुमार**
वरिष्ठ लिपिक
(राजभाषा विभाग)
मो. 7042401724

# गरीब की कीमत

**(एक गीत...)**

अमीरों की पहचान यहां, गरीब की कीमत कोई नहीं,
संभल कर रहना इस दुनिया में, इज्जत करता कोई नहीं।
अमीरों की पहचान यहां, गरीब की कीमत कोई नहीं,
संभल कर रहना इस दुनिया में, इज्जत करता कोई नहीं।।

गांव समाज देश दुनिया ना, कोई, अमीरों का सब रिश्ता है,
गांव समाज देश दुनिया ना, कोई, अमीरों का सब रिश्ता है।
मेहनत मजदूरी खून पसीना मिट्टी से भी सस्ता है, मिट्टी से भी सस्ता है,
सबका तेरे, खून से नाता, तेरी जरूरत कोई नहीं,
संभल कर रहना इस दुनिया में इज्जत करता कोई नहीं।।

घूस-शोषण की यह मंडी, सबकी यही कहानी है,
घूस-शोषण की यह मंडी, सबकी यही कहानी है।
कहते हैं अधिकार जिसे वह सब अमीरों की यह कहानी है, सब अमीरों की यह कहानी है।
झूठ है, मानव इस दुनिया का और हकीकत कोई नहीं,
संभल कर रहना इस दुनिया में इज्जत करता कोई नहीं।

गरीबी क्या है, चीज यहाँ, मत पूछ आँख भर आती है,
गरीबी क्या है, चीज यहाँ, मत पूछ आँख भर आती है,
रात में करते, रैन बसेरा जल्दी सुबह हो जाती है, जल्दी सुबह हो जाती है।
न्यायालय बनकर इस दुनिया में न्याय करता कोई नहीं,
संभल कर रहना इस दुनिया में, इज्जत करता कोई नहीं, इज्जत करता कोई नहीं।।

# रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के तत्वावधान में आधुनिक रेल डिब्बा कारख़ाना, रायबरेली में अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता (आधार वर्ष-2024) का आयोजन

आधुनिक रेल डिब्बा कारख़ाना, रायबरेली में रेलवे बोर्ड के तत्वावधान में अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता (आधार वर्ष-2024) का आयोजन **दिनांक 07.10.2025 से 09.10.2025** तक किया गया, जिसमें हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन एवं वाक् प्रतियोगिता शामिल थी।

**अखिल रेल हिंदी निबंध प्रतियोगिता का** आयोजन दिनांक 07.10.2025 को संपन्न कराया गया। अखिल रेल स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में विभिन्न क्षेत्रीय रेलें/ उत्पादन इकाई/ प्रशिक्षण संस्थान इत्यादि के अधिकारियों/ कर्मचारियों ने भाग लिया।

**अखिल रेल हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता** दिनांक 07.10.2025 को दूसरी पाली में आयोजित की गई। क्षेत्रीय रेलों इत्यादि द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम आए कार्मिकों द्वारा अखिल रेल स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में सहभागिता की जाती है।

दिनांक 08.10.2025 को **अखिल रेल हिंदी वाक् प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित प्रतियोगिता का विषय **"बढ़ते प्रदूषण के कारण और वैज्ञानिक तरीके से उनके स्थाई निवारण"** अथवा **"भारत का अंतरिक्ष में बढ़ता दबदबा और देश की वैश्विक स्थिति"** था।

**सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं पुरस्कार वितरण समारोहः** अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता के अंतर्गत 'सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं पुरस्कार वितरण समारोह' दिनांक 09.10.2025 को संपन्न किया गया,

जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में माननीय महाप्रबंधक महोदय, आरेडिका सादर आमंत्रित थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में अध्यक्षा , महिला कल्याण संगठन, आरेडिका आमंत्रित थीं। पुरस्कार वितरण समारोह में आरेडिका के सांस्कृतिक संगठन एवं स्काउट & गाइड द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई।

*पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर सांस्कृतिक संगठन एवं स्काउट व गाइड, आरेडिका की टीम की प्रस्तुति*

*अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह में संबोधित करती निदेशक (राजभाषा), रेलवे बोर्ड एवं महाप्रबंधक महोदय, आरेडिका पुरस्कार वितरित करते हुए*

## *अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिताः आरेडिका, राजभाषा विभाग का एक प्रयास_सफल आयोजन*

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के तत्वावधान में प्रत्येक वर्ष अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन विभिन्न क्षेत्रीय रेलों/उत्पादन इकाइयों एवं प्रशिक्षण संस्थानों इत्यादि के सहयोग से आयोजित किया जाता है । इस वर्ष (आधार वर्ष-2024) यह प्रतियोगिता आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली में महाप्रबंधक महोदय, श्री प्रशांत कुमार मिश्रा के संरक्षण एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त, रे. सु. बल के मार्गदर्शन में आयोजित की गई ।

अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता में पूरे भारतवर्ष से आये हुए रेलकर्मियों में अभूतपूर्व उत्साह देखने को मिला । प्रतिभागियों ने अखिल रेल हिंदी निबंध प्रतियोगिता, अखिल रेल हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता एवं अखिल रेल हिंदी वाक् प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया ।

आधुनिक रेल डिब्बा कारख़ाना, रायबरेली में अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता के सफल आयोजन पर प्रतिभागियों ने टीम राजभाषा/आरेडिका के प्रति अपना आभार प्रकट किया, जिनके अनुभव नीचे साझा किये जा रहे हैं:-

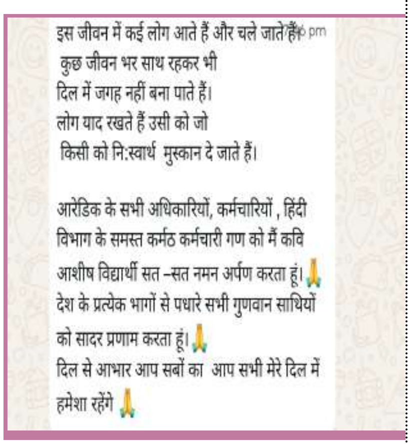
इस जीवन में कई लोग आते हैं और चले जाते हैं
कुछ जीवन भर साथ रहकर भी
दिल में जगह नहीं बना पाते हैं।
लोग याद रखते हैं उसी को जो
किसी को नि:स्वार्थ मुस्कान दे जाते हैं।

आरेडिक के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों , हिंदी विभाग के समस्त कर्मठ कर्मचारी गण को मैं कवि आशीष विद्यार्थी सत –सत नमन अर्पण करता हूं। 🙏
देश के प्रत्येक भागों से पधारे सभी गुणवान साथियों को सादर प्रणाम करता हूं। 🙏
दिल से आभार आप सबों का आप सभी मेरे दिल में हमेशा रहेंगे 🙏

~ VIKRAMJIT SINGH +91 97795 90327
मैं, पटियाला रेल इंजन कारखाना/ पटियाला टीम की तरफ से, अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिताओं 2025 के सभी आयोजकों के प्रति हृदय से धन्यवाद व्यक्त करता हूँ । आपने जिस उत्कृष्ट व्यवस्था, आतिथ्य और समर्पण के साथ इस कार्यक्रम को सफल बनाया, वह वास्तव में प्रशंसनीय है। आवास और भोजन की जो उत्तम सुविधा प्रदान की गई, उसने हमें घर जैसा स्नेह और आराम महसूस कराया। आपकी सूझबूझ, अनुशासन और विनम्रता ने इस आयोजन को यादगार बना दिया। हम आपके इस प्रयास और आतिथ्य के लिए सच्चे मन से आभारी हैं और कामना करते हैं कि आप इसी निष्ठा और ऊर्जावान भावना के साथ आगे भी ऐसे प्रेरणादायक आयोजन करते रहें।

धन्यवाद आरेडिका ।
@ श्री अष्टानंद पाठक जी
@ श्री राकेश रंजन जी
@ मोहम्मद अकरम जी 🙏🙏🙏
12:55 pm

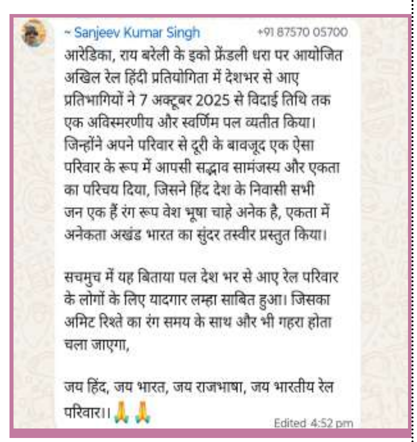
~ Sanjeev Kumar Singh +91 87570 05700
आरेडिका, राय बरेली के इको फ्रेंडली धरा पर आयोजित अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता में देशभर से आए प्रतिभागियों ने 7 अक्टूबर 2025 से विदाई तिथि तक एक अविस्मरणीय और स्वर्णिम पल व्यतीत किया। जिन्होंने अपने परिवार से दूरी के बावजूद एक ऐसा परिवार के रूप में आपसी सद्भाव सामंजस्य और एकता का परिचय दिया, जिसने हिंद देश के निवासी सभी जन एक हैं रंग रूप वेश भूषा चाहे अनेक है, एकता में अनेकता अखंड भारत का सुंदर तस्वीर प्रस्तुत किया।

सचमुच में यह बिताया पल देश भर से आए रेल परिवार के लोगों के लिए यादगार लम्हा साबित हुआ। जिसका अमिट रिश्ते का रंग समय के साथ और भी गहरा होता चला जाएगा,

जय हिंद, जय भारत, जय राजभाषा, जय भारतीय रेल परिवार।। 🙏🙏
Edited 4:52 pm

~ P K Ojha +91 94156 38208
~ Cp Chouhan Vice Principal +91 94149 25033
19 photos
सभी को पुनः बधाई 🙏

आप समस्त बुद्धिजनों से हुई अवस्मरणीय भेंट मेरे मानस पटल पर सदैव अमिट रहेगी, आप सभी अपने अपने कार्यक्षेत्र मे प्रथम पंक्ति के व्यक्तित्व हैं,आप सबके बीच रहकर मुझे बहुत कुछ सिखने को मिला हैं।

मेरी यही उत्कट आकांक्षा हैं कि आप सभी अपने जीवन में सफलता की नित्य नयी ऊंचाइयों को छुए।

🙏

P. K. OJHA
(प्रद्युम्न कुमार ओझा)
Inspector/RPF/NCR.
9415638208
9:28 am

सभी वरिष्ठ अधिकारीयोंको और पूरी मैनेजमेंट टीम को दिलसे आभार जो हमारी सारी सुविधाओंका आपने प्रबंध किया।
इस टूरने बहोत आनंद दिया और हम रेलवे के योद्धा है इसपर गर्व महसूस हुआ।
🙏🙏🙏
अनिता सातपुते
वाणिज्य अधीक्षक
पश्चिम रेलवे
4:41 pm

~ Cp Chouhan Vice Principal +91 94149 25033
बहुत शानदार आयोजन,गीत संगीत व नृत्य से सुसज्जित मनमोहक कार्यक्रम, कुशल निर्देशन, समर्पित व हमेशा सहायता को आतुर संवेदनशील कार्यकर्त्ता जिन्होंने हमें इस सुखद अरण्य में परिवार सा आभास दिया व उत्साही व ऊर्जावान प्रतिभागी जिनमे आपसी प्रतिद्वंदिता कम वरन एक दूसरे के प्रति सम्मान व अनुराग अधिक था, हरियाली व वृक्षारोपण को समर्पित उच्च संस्थान जो स्वयं प्रेरणादायक है इस प्रकार के वातावरण में प्राचीन तपोभूमि व अधिकारीयों में ऋषियों जैसा तेज, प्रताप अनुभव करने का सुअवसर प्राप्त हुआ
मैं इस पूरे माहौल को अब बहुत कर मिस रहा हूँ बहुत सी सुनहरी यादें लेकर अब अपने कार्य क्षेत्र की ओर प्रस्थान कर रहा हूँ
इस आशा के साथ कि पुन: भेंट होंगी
Edited 9:09 am

आरेडिका में यह प्रतियोगिता पहली बार आयोजित की जा रही थी। महाप्रबंधक, आरेडिका श्री प्रशांत कुमार मिश्रा के संरक्षण में, मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री रमेश चन्द्र, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री अष्टानन्द पाठक एवं राजभाषा अधिकारी श्री राकेश रंजन ने इसे *'हिंदी सेवा'* का अवसर मानते हुए समय रहते विभिन्न विभागों के साथ समन्वय स्थापित कर एक सुव्यवस्थित एवं प्रभावी कार्ययोजना तैयार की। इसी का परिणाम रहा कि प्रतिभागियों को नजदीकी रेलवे स्टेशन से लाने–ले जाने, छात्रावास तथा भोजन व्यवस्था से संबंधित सभी व्यवस्थाएँ बिना किसी शिकायत के सफलतापूर्वक संपन्न की गई, जो कि रेलवे बोर्ड एवं प्रतिभागियों की संतुष्टि एवं प्रसन्नता का भी कारण बनीं।

~ VIBHAY SRIVASTAV +91 63076 16132

एक पत्र आया,
कि अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता, आरेडिका रायबरेली में होनी है,
मन रूठ सा गया कि कहां भेज दिया यार, काश कश्मीर, कन्याकुमारी कहीं भेजता घूम के आते, लेकिन आरेडिका में पहुंचने के बाद , आप की मेहमान नवाजी, सुखद प्रबंध, और पर्यावरण अनुकूलित आपका कारखाना , सभी ने मंत्रमुग्ध किया, काबिलेतारीफ आयोजन के लिए आप सब का बहुत आभार और मै आरेडिका के सभी सम्मानित जनों को आश्वस्त करता हूं कि आपके कारखाने के साथ आपकी चौतरफा तारीफ संपूर्ण रेल इकाई में होने जा रही है जिसके माध्यम हम होंगे..!
एक बार फिर आप सभी को कुशल आयोजन हेतु धन्यवाद और ये कारखाना ऐसे ही उदाहरण भविष्य में पेश करता रहे ऐसी कामना..!
**धन्यवाद आरेडिका**
🙏
@Akram Sir Mcf
@Ashanand Pathak Sir MCF Dy Rajbhash Adhikari
@Rakesh Ranjan Sir MCF

🖋
**विभय श्रीवास्तव**
कनिष्ठ लिपिक
मुंबई मंडल-पश्चिम रेलवे

कार्यक्रम के सफल आयोजन में समस्त विभागीय टीम का योगदान अनुकरणीय रहा। सभी सदस्यों ने अपनी जिम्मेदारियों का समर्पण, दक्षता और टीम भावना के साथ निर्वहन किया। यही कारण है कि यह प्रतियोगिता न केवल भाषाई श्रेष्ठता का मंच बनी, बल्कि विभिन्न रेल इकाइयों के बीच **सांस्कृतिक जुड़ाव और संवाद का अवसर** भी प्रदान कर सकी।

समापन सत्र में आरेडिका के महाप्रबंधक महोदय, मुख्य राजभाषा अधिकारी, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं राजभाषा अधिकारी तथा रेलवे बोर्ड के सदस्यगण ने हिंदी के संवर्धन और राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में इस प्रकार की प्रतियोगिताओं को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता ने सिद्ध कर दिया कि **भारतीय रेल परिवार हिंदी भाषा की आत्मा को जीवंत रखने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है।** महाप्रबंधक महोदय, आरेडिका ने आश्वस्त किया कि भविष्य में भी आरेडिका इस तरह के आयोजनों के लिए तत्पर एवं कटिबद्ध रहेगा।

**राजेश पाल**
कनिष्ठ लिपिक
(राजभाषा विभाग)
मो. 9650384804

# इतिहास का धमाका

## भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने रचा विश्व विजय का स्वर्णिम अध्याय

2 नवंबर 2025 की रात नवी मुंबई में इतिहास रच दिया। कप्तान हरमनप्रीत कौर की शेरनी ब्रिगेड टीम इंडिया ने आईसीसी महिला एकदिवसीय विश्व कप 2025 के रोमांचक फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को 52 रनों से पटखनी देते हुए अपना पहला आईसीसी खिताब जीता। इस जीत के साथ ही देश का 52 साल का लंबा इंतजार समाप्त हो गया और भारतीय क्रिकेट में एक नया स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया।

**<u>संघर्ष की कहानी:- शून्य से शिखर तक का सफर</u>**- यह जीत सिर्फ 52 रनों के अंतर की कहानी नहीं है, बल्कि दशकों के धैर्य और विपरीत परिस्थितियों से जूझने का परिणाम है। टीम की कई सदस्यों ने सीमित संसाधनों, दशकों की तपस्या, टूटी पिचों पर अभ्यास और आर्थिक तंगी की गहरी पृष्ठभूमि से आकर यह मुकाम हासिल किया है। यह जीत उन सभी संघर्षों पर विजय है, जब उन्हें बुनियादी सुविधाओं और पहचान के लिए भी जूझना पड़ता था। लीग चरण में भी टीम का सफर उतार-चढ़ाव भरा रहा, जहाँ कुछ करीबी हारों ने वापसी के लिए मजबूर किया। सेमीफाइनल में विश्व चैंपियन ऑस्ट्रेलिया पर मिली शानदार जीत ने फाइनल तक पहुँचने के लिए एक अटूट आत्मविश्वास दिया।

**"हार के आगे जीता उन्होंने, डर के आगे नाम,**
**पत्थर भी पिघला दिए इन्होंने, दिखा दिया महिलाओं का दम और काम।"**

इन चुनौतियों ने उन्हें तोड़ा नहीं, बल्कि और मजबूत बनाया। मिताली राज और झूलन गोस्वामी जैसी दिग्गजों ने जो नींव रखी, उसी पर खड़ी होकर हरमनप्रीत की टीम ने यह ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है, जिसे महिला प्रीमियर लीग (WPL) ने और भी सशक्त किया।

**<u>फाइनल की चिंगारी चमके सितारे और निर्णायक जीतः-</u>** पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत ने निर्धारित ओवरों में 6 विकेट पर 298 रन ठोककर फाइनल मैच को रोमांच का महायुद्ध बना दिया और विशाल स्कोर खड़ा किया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी दक्षिण अफ्रीका की पूरी टीम भारतीय गेंदबाजों की रफ्तार और स्पिन के आगे घुटने टेक गई और 246 रन पर ढेर हो गई।

इस ऐतिहासिक जीत में, सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा (प्लेयर ऑफ द मैच) और ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा (प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट) ने निर्णायक भूमिका निभाई।

**"बल्ले से बरसी आग, गेंद से निकली गर्जना,**
**किस्मत भी झुकी इनके आगे, जीत की हुई घोषणा।"**

**<u>जश्न और प्रभाव: नारी शक्ति का नया युगः-</u>** जैसे ही दक्षिण अफ्रीका का आखिरी विकेट गिरा, पूरे देश में दिवाली जैसा माहौल बन गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने टीम की दृढ़ता की सराहना करते हुए बधाई दी। सचिन तेंदुलकर से लेकर विराट कोहली, और बॉलीवुड के अभिनेता अमिताभ बच्चन जैसी विभिन्न हस्तियों ने सोशल मीडिया पर उत्साह व्यक्त किया। यह जीत न केवल राष्ट्रीय मीडिया बल्कि वैश्विक मीडिया में भी प्रमुखता से छाई रही, जिसने भारत की 'वूमेन इन ब्लू' को सुर्खियों में ला दिया।

यह ऐतिहासिक विजय देश में महिलाओं के सशक्तीकरण का प्रतीक है और हर उस लड़की के लिए एक प्रेरणा है, जो खेलने का सपना देखती है।

**"अबला नहीं, सबला है तू, गूँजेगा तेरा नाम,**
**नभ छूने चली ये बेटियाँ, पूरा होगा हर काम।"**
**"ये बेटियाँ नहीं, ये शक्ति हैं देश की पहचान,**
**झुका है विश्व इनके आगे, बढ़ाया है भारत का मान।।"**

भारतीय महिला क्रिकेट के लिए यह वास्तव में एक नए और शानदार युग की शुरुआत है।

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के बारे में जानें

- *"नराकास" का गठन: राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय के दिनांक 22.11.1976 के का.ज्ञा.सं. 1/14011/12/76-रा.भा.(का-1) के अनुसार देश के उन सभी नगरों में जहां केंद्रीय सरकार के 10 या इससे अधिक कार्यालय हों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा सकता है।*
- *समिति का गठन राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर भारत सरकार के सचिव(राजभाषा) की अनुमति से किया जाता है।*
- *इन समितियों के गठन का प्रमुख उद्देश्य केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करना, इसे बढ़ावा देना और इसके मार्ग में आई कठिनाइयों को दूर करना है।*

**विश्वमोहन कुमार**
वरिष्ठ तकनीशियन
(यांत्रिक विभाग)
मो. 8303447962

# जिंदगी की दौड़

*भागम-भाग सी जिंदगी में,*
*कब चैन हमें मिल पाता है।*
*दौड़ में हर कोई आगे बढ़े,*
*पर सपना कहीं छुप जाता है।।*

*सड़कों-सी उलझी राहों में,*
*कदम-कदम पर शोर मिले।*
*थककर बैठे जो पल भर को,*
*तब जीवन के असल दौर मिले।।*

*कभी रुककर खुद से पूछो,*
*किस मंजिल की चाह लिए।*
*कौन-सा सुख पाना चाहो,*
*किस सपने की राह लिए॥*

*जिंदगी कोई दौड़ नहीं है,*
*ये एक मीठी, धीमी तान।*
*थोड़ा ठहरो, मुस्कान बटोरो,*
*यही है इसका सच्चा मान।।*

*भागम-भाग को छोड़ो जरा,*
*सांसों का संगीत सुनो।*
*छोटे-से हर पल में छिपे,*
*जीने की वजह तुम चुनो।।*

**गौतम सागर**
आशुलिपिक
(परियोजना विभाग)
मो. 7818868251

## जीवन की अपूर्णताओं में छिपी पूर्णता

हम सभी जीवन में खुशियाँ, सफलता और सब कुछ सही-सही होने की कामना करते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे परिवार, काम, रिश्ते और हर चीज़ में कोई कमी न हो। पर क्या सच में कोई चीज पूरी तरह से परिपूर्ण हो सकती है? क्या जीवन में सब कुछ हमेशा सही और बेहतरीन हो सकता है? असल में, जीवन की एक बड़ी सच्चाई यह है कि **कोई भी चीज परिपूर्ण नहीं होती, बल्कि जीवन ही है जो चलता रहता है।**

यह बात समझना बहुत जरूरी है कि जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। कभी हम खुश होते हैं, तो कभी दुःखी। कभी हमारे काम सफल होते हैं, तो कभी असफल। यह बदलाव और अधूरापन ही जीवन को असली बनाते हैं। अगर हर चीज़ पूरी तरह से सही और बिना गलती के हो जाए, तो वह जीवन नहीं, बल्कि एक आदर्श कल्पना होगी।

हममें से बहुत लोग परिपूर्ण बनने की कोशिश में अपनी असली खुशियाँ और अनुभव खो देते हैं। वे सोचते हैं कि तभी जीवन सुंदर होगा, जब सब कुछ ठीक-ठाक होगा, लेकिन असल में, जीवन का मज़ा और उसका मतलब तो उसकी अनिश्चितता और असफलताओं में छुपा होता है। गलतियाँ करना, कोशिश करना, गिरना और फिर उठना, यही जीवन का असली रंग है।

जब हम अपनी गलतियों को स्वीकार करते हैं और उनसे सीखते हैं, तभी हम मजबूत बनते हैं। जीवन में अगर हमेशा सबकुछ परिपूर्ण होता, तो हम कभी सीखते ही नहीं। गलतियाँ और चुनौतियाँ हमें बेहतर इंसान बनाती हैं, हमारा अनुभव बढ़ाती हैं।

परिपूर्णता की चाह हमें कई बार चिंता, दबाव और तनाव में डाल देती है। हम बार-बार सोचते हैं कि क्या हम ठीक हैं ? क्या हमारा काम अच्छा है ? क्या हमारे रिश्ते सही हैं ? पर याद रखिए, जीवन ऐसा नहीं होता कि सब कुछ हमेशा सही हो। जीवन को वैसे ही स्वीकार करना जरूरी है जैसे वह है-अपनी ख़ामियों, अपनी गलतियों और अपनी सफलता के साथ।

जब हम जीवन की इस सच्चाई को अपनाते हैं, तो हम अंदर से शांत हो जाते हैं। हमें अपने आप पर विश्वास होता है और हम जीवन का आनंद लेने लगते हैं। यह समझना कि कोई भी इंसान या परिस्थिति पूरी तरह से परिपूर्ण नहीं हो सकती, हमें ज़्यादा खुश और संतुष्ट बनाता है।

अतः, कोई परिपूर्णता नहीं है, केवल जीवन है। यह एक ऐसी सीख है, जो हमें जीवन के हर पल को पूरी संवेदनशीलता और स्वीकृति के साथ जीना सिखाती है। जीवन के अनुभव चाहे अच्छे हों या बुरे, सभी मिलकर हमारी ज़िंदगी को अर्थपूर्ण बनाते हैं।

परिपूर्णता की खोज छोड़कर, जीवन को उसकी वास्तविकता में स्वीकार करना ही असली जीत है। यह स्वीकार्यता हमें अंदर से मजबूत बनाती है और जीवन को सही मायनों में जीने का साहस देती है।

**हिंदी बोले जाने और लिखे जाने के आधार पर देश के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को तीन क्षेत्रों में चिह्नित किया गया है। इन तीनों क्षेत्रों यथा 'क', 'ख' और 'ग' का विवरण निम्नानुसार हैः-**

| क्षेत्र | क्षेत्र में शामिल राज्य/संघ राज्य क्षेत्र |
|---|---|
| 'क' | बिहार, छत्तीसगढ, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र। |
| 'ख' | गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन व दीव और दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र। |
| 'ग' | 'क' और 'ख' क्षेत्र में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र। |

**सुरेश कुमार**
वरिष्ठ तकनीशियन
(यांत्रिक विभाग)
मो. 8609397415

## पर्यावरण गीत

वृक्ष लगायें, वृक्ष लगायें।
पर्यावरण को स्वच्छ बनायें,
इसकी करें तैयारी, चलो हम वृक्ष लगायें।।

गर्मी से बचने का तरीका बड़ा ही आसान है।
बैठकर इसकी छाँव में, मिलता सभी को आराम है,
पशु-पक्षी भी गुंजन करते, इसका भान करायें।।
चलो हम वृक्ष लगायें।

वृक्षों से हमको मिलता फल लकड़ी और ऑक्सीजन।
मन भी प्रसन्न रहता, मिलता सभी को है भोजन,
हरियाली की छटा बिखेरे, सबके मन को भाये।।
चलो हम वृक्ष लगायें।

कोयल बाग में बोले, लगता सभी को बड़ा प्यारा है।
उपवन में मोर नाचे, लगता सभी को बड़ा न्यारा है,
सुरेश कुमार भी कविता कहकर इसका महत्व बताए,
चलो हम वृक्ष लगायें...।।

**शिखा रावत**
मुख्य कार्यालय अधीक्षक
(कार्मिक विभाग)
मो. 7985787256

## हमारा संविधान, हमारा स्वाभिमान
**(26 नवंबर - संविधान दिवस पर विशेष)**

वह कौन-सी चीज है, जिसे हम देख तो सकते हैं परंतु छू नहीं सकते ? उक्त प्रश्न 1947 से पहले एक कक्षा में विद्यार्थियों से किया गया था। तब उस कक्षा में बैठे किसी विद्यार्थी ने कहा हम आसमान देख तो सकते हैं, परंतु छू नहीं सकते। किसी ने कहा हम सूरज को देख तो सकते हैं, परंतु छू नहीं सकते। तब कक्षा के बाहर खड़े होकर पढ़ने वाले एक छात्र ने डबडबायी आँखों से पानी के घड़े की ओर देखते हुए कहा कि, यदि मैं प्यास से मर भी रहा हूँ तो भी मैं इस घड़े को देख तो सकता हूँ परंतु छू नहीं सकता। यह विद्यार्थी कोई और नहीं बल्कि हमारे **संविधान के निर्माता बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी** थे। आज 75 वर्ष बाद सवाल भी वही है, कक्षा भी वही है और पानी का घड़ा भी वही है परंतु अगर कुछ बदला है तो ये कि आज बच्चा किसी भी धर्म या जाति का हो, वह सभी के साथ पढ़ भी सकता है, खेल भी सकता है और पानी भी पी सकता है। और इतना ही नहीं एक आदिवासी महिला के रूप में राष्ट्रपति पद पर बैठकर देश की प्रगति का मार्ग भी प्रशस्त कर सकती है। ये ताकत दी है हमें हमारे संविधान ने।

**" मैंने तो उपहार दिये हैं, और मौलिक अधिकार दिये हैं।**
**धर्म, कर्म, संस्कार दिये हैं, जीने के अधिकार दिये हैं।**
**मेरे वादे समता के हैं, दीन दुःखी से ममता के हैं। ॥"**

जब-जब बात हमारे अधिकारों की आयी है तब-तब हमारे संविधान ने हमारी रक्षा की है। तब वो चाहे IPC की धारा 377 के तहत समलैंगिक समाज के अधिकारों की हो या श्रीकांत बोला जैसे दिव्यांगजनों के शिक्षा के अधिकार की या महिलाओं के लिए दहेज जैसी कुप्रथा का बोझ हो, संविधान ने हमेशा रक्षा कर इन्हें एक सूत्र में बांधने का काम किया है।

जरा सोचिए, यदि संविधान न होता तो क्या होता? शायद हम आज भी किसी भटकती नौका में ऊफान ले रहे होते, या ये कहें कि अन्य राष्ट्र हमारे हालात का अनुमान लगा रहे होते। हमारे संविधान ने संपूर्ण राष्ट्र को दिशा दी है।

एक राज्य का संविधान उन मौलिक सिद्धांतों का समूह होता है, जिनके अनुसार वह राज्य संचालित होता है। भारत का संविधान भारतीय गणराज्य का सर्वोच्च ग्रंथ है। यह देश की राजनीतिक प्रणाली का ढ़ांचा प्रस्तुत करता है। सरकारी संस्थाओं की शक्तियों और जिम्मेदारियों को परिभाषित करता है और शासन के सिद्धांतों को निर्धारित करता है।

**संविधान अस्तित्व में कैसे आया ?**

1. सर्वप्रथम 1934 में एम. एन. राय ने संविधान सभा का विचार प्रस्तुत किया।
2. 1946 में कैबिनट मिशन के तहत संविधान सभा का गठन हुआ।
3. 1946 में ही पं. जवाहर लाल नेहरू ने उद्देश्य प्रस्ताव प्रस्तुत किया।
4. 1947 में डॉ. बी. आर. अम्बेडकर प्रारूप समिति के अध्यक्ष बने।
5. **26 नवंबर 1949 को 2 साल 11 माह 18 दिन की मेहनत के बाद संविधान अंगीकृत किया गया।**

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के अनुसार " **संविधान केवल वकीलों का दस्तावेज नहीं है। यह जीवन का वाहन है और उसकी आत्मा सदैव समय की आत्मा होती है।"**

भारतीय संविधान में वे सभी मूल्य नज़र आते हैं, जो इसे विश्व का महानतम् संविधान बनाते हैं। विश्व का सबसे लंबा लिखित संविधान यह घोषित करता है कि भारत में शक्ति और अधिकार का अंतिम स्रोत जनता है। "To the People,  For the people, By the People."

राज्य को संचालित करने का विस्तृत विवरण इसके नीति-निदेशक तत्वों में स्पष्टतः दिखता है और ये तत्व सुनिश्चित करते हैं कि भारत कल्याणकारी राज्य बने न कि एक पुलिस राज्य।

संविधान प्रत्येक नागरिक को स्वतंत्रता, गरिमा और कल्याण हेतु मौलिक अधिकार देता है। इसके संवैधानिक संशोधन के प्रावधान इसके लचीलेपन को दिखाते हैं।

अनुच्छेद 14, 15 व 16 समानता का अधिकार देते हैं व लैंगिक भेदभाव को रोककर महिला सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभाते हैं।

अनुच्छेद 21 (A) 06 से 14 वर्ष के बच्चों को अनिवार्य शिक्षा देता है वहीं अनुच्छेद 23 मानव तस्करी व बलपूर्वक श्रम को रोकता है।

भारतीय समाज में धर्म महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए संविधान अल्पसंख्यकों व बहुसंख्यकों दोनों की रक्षा करता है। यह धार्मिक अल्पसंख्यकों को अधिकार भी प्रदान करता है और यह भारतीय संविधान की धर्मनिरपेक्ष प्रकृति का मूल है।

भारतीय संविधान भाषायी अल्पसंख्यकों को भी अधिकार प्रदान करता है, क्योंकि भाषायें संस्कृति को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अनुच्छेद 29 व 30 भाषाओं की सुरक्षा का

अधिकार व अपनी भाषा में शिक्षा प्रदान करने का अधिकार देते हैं। इसीलिए संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को शामिल किया गया है और इनमें **हिंदी हमारी राजभाषा है**।

**"हमने तहरीर की है कागजों पर सदियों की बातें,**
**हमने तहरीर की है कागजों पर सदियों की बातें,**
**संविधान यूँ ही नहीं हर लफ़्ज़ में एक कौम की साँसें॥"**

भारतीय इतिहास दलितों और महिलाओं के खिलाफ भेदभाव से भरा रहा है। भारतीय संविधान ने भारतीय समाज को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों की सुरक्षा के लिए संविधान ने एक स्वतंत्र न्यायपालिका की व्यवस्था की है। भारत का सर्वोच्च न्यायालय विश्व का सबसे सशक्त न्यायालय है। न्यायपालिका की स्वतंत्रता के लिए संविधान में न्यायाधीशों की नियुक्ति से लेकर उनकी सेवानिवृत्ति तक कई प्रावधान किए हैं ताकि वे बिना किसी राजनीतिक दबाव के अपने कर्तव्यों का पालन कर सकें।

संविधान के अनुच्छेद 32 व 226 के तहत संवैधानिक रिट्स उपलब्ध कराई गई हैं ताकि मौलिक अधिकारों के उल्लंघन की स्थिति में जनता सीधे उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय जा सके।

राष्ट्रीय स्तर पर संविधान संघीय कार्यपालिका को परिभाषित करता है, जिसके प्रमुख **राष्ट्रपति** होते हैं। संविधान यह सुनिश्चित करता है कि संसद का कोई भी अंग निरंकुश न बन जाए इसलिए Check and balance की व्यवस्था की गई है। अनुच्छेद 61 विधायिका को यह अधिकार देता है कि वे राष्ट्रपति पर महाभियोग चला सकती है तथा अनुच्छेद 75 भारत सरकार को विधायिका के प्रति उत्तरदायी बनाता है।

यद्यपि संविधान ने नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने और लोकतंत्र को सुरक्षित रखने में असाधारण भूमिका निभाई है, परंतु इसके क्रियान्वयन में आज भी कुछ चुनौतियाँ मौजूद हैं।

लोकतांत्रिक संस्थाओं की संस्थागत कमजोरी, न्यायपालिका के समक्ष भारी लंबित मामले, न्यायालयों में न्यायाधीशों के रिक्त पद आदि सभी भारत में न्याय प्रदान करने की दक्षता पर गंभीर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं। क्योंकि यह कहा गया है - Justice Delayed = Justice Denied. और यह भारतीय न्याय-प्रणाली की दुःखद वास्तविकता है।

भारत के निर्वाचन आयोग के कथित मनमाने व्यवहार को लेकर विपक्षी पार्टियों द्वारा समय-समय पर उठाए गए सवाल स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया के विश्वास को कमजोर करते हैं, जिससे लोकतंत्र की प्रकृति प्रभावित होती है।

वैश्विक स्तर पर भारत की छवि धीरे-धीरे चुनावी निरंकुशता (Electoral Autocracy) की तरफ परिवर्तित होती दिख रही है, जो लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर गंभीर चिंताएँ उत्पन्न करती है।

इस प्रकार भारत में लोकतांत्रिक संस्थाओं की संरचना और कार्यप्रणाली में सुधार की आवश्यकता है ताकि लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में जनता का विश्वास पुनः स्थापित हो और आने वाली पीढ़ियाँ प्रगति कर सकें। इसलिए भारतीय संविधान एक स्थिर नहीं बल्कि जीवंत दस्तावेज है, जो दिन-प्रतिदिन राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुसार खुद को निखार रहा है और विकास कर रहा है। आगे बढ़ते हुए संविधान की भावना को बनाए रखना और उसकी दृष्टि को साकार करने के लिए सतत् प्रयास करना भारत के लिए महत्वपूर्ण होगा ताकि वह भविष्य की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सके और अपने सभी नागरिकों के लिए न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के वादे को पूरा कर सकें।

आज हमारा भारत देश अपने साथ आजाद होने वाले राष्ट्रों से बहुत आगे है क्योंकि उन्होंने धर्म को अपना संविधान माना और हमने संविधान को अपना धर्म माना। हमारे संविधान पर यह लाइने अक्षरशः सही प्रतीत होती है:-

**" मैं खुद ही अपना वंशज हूँ, मैं खुद ही अपना वारिस हूँ।**
**बाधाओं का मुझे डर नहीं, मैं' मेहनत से जन्मा पारस हूँ।"**

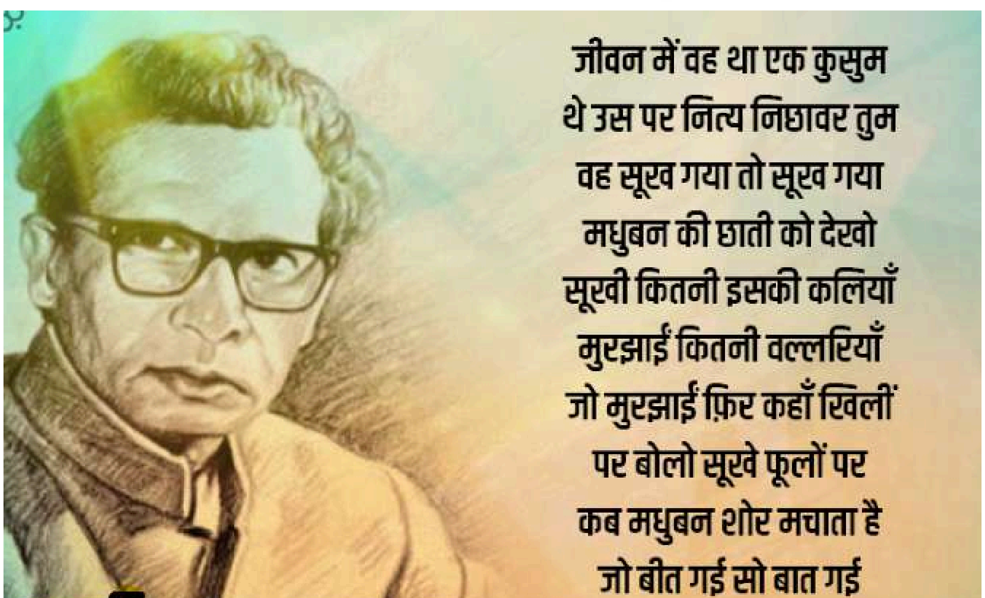


**जो बीत गई**

हरिवंशराय बच्चन

# आरेडिका, रायबरेली में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायबरेली की अर्धवार्षिक बैठक सम्पन्न

- *नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायबरेली की अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 06.10.2025 को आरेडिका,रायबरेली में सम्पन्न हुयी।*
- *बैठक में गृह मंत्रालय से उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद (डॉ. छबिल कुमार मेहेर), महाप्रबंधक, आरेडिका (श्री प्रशांत कुमार मिश्रा), अध्यक्ष, नराकास संयोजक कार्यालय (बैंक ऑफ बड़ौदा, रायबरेली), सदस्य सचिव, नराकास एवं विभिन्न सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधिगण उपस्थित थे।*
- *बैठक में राजभाषा संबंधी छमाही प्रगति रिपोर्ट, विभिन्न कार्यालयों द्वारा सम्पन्न गतिविधियाँ, आगामी कार्ययोजना इत्यादि पर विस्तार से चर्चा की गयी।*
- *विभिन्न कार्यालयों द्वारा करायी गयी राजभाषा संबंधी प्रतियोगिताओं में आरेडिका,रायबरेली प्रथम स्थान पर रहा।*
- *नराकास, रायबरेली के लोगो (Logo) एवं नराकास, रायबरेली की छमाही पत्रिका 'अभिज्ञान' का अनावरण भी इसी बैठक में किया गया।*

# मोबाइल फोन पर हिंदी टाइपिंग

- Play Store में जाकर Google Indic Keyboard डाउनलोड करके इंस्टाल करें।
- Setting >> Language and Input में जाकर Keyboard & Input Method में से Current Keyboard या Default Keyboard में से English & Indic Languages Google Indic Keyboard को चुनें।

मोबाइल फोन पर गूगल वाइस टाइपिंग

- Setting >> Language and Input Option में से Google Voice Typing विकल्प का चयन करें।
- Language: हिंदी (भारत) का चयन करें। एक समय पर एक ही भाषा का चयन कर सकते हैं।
- Offline Speec Recognition का भी चयन करें। All पर क्लिक करके हिंदी (भारत) को डाउनलोड करें।
  यदि मोबाइल फोन में Android 7.0 OS है तो Setting >> Language and Input >> Virtual Keyboard के अंतर्गत Google Voice Typing विकल्प को चुनें।

➔ जब भी टाइप करना हो तो की-बोर्ड पर उपलब्ध माइक्रोफोन के बटन पर क्लिक करें और सामान्य गति और वॉल्यूम से स्पष्ट रूप से अपना पाठ बोलें, इससे आप SMS, Whatsapp, E-mail, Google Docs आदि पर वाइस टाइपिंग कर सकेंगे।

# आरेडिका की झलकियाँ

संविधान दिवस पर उद्देशिका का पाठ करते हुए महाप्रबंधक एवं अन्य अधिकारीगण (दिनांक 26.11.2025)

आरेडिका में रेलवे बोर्ड के तत्वावधान में आयोजित अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता में उप निदेशक (रेलवे बोर्ड) का संबोधन (दिनांक 07.10.2025)

आरेडिका में सम्पन्न नराकास, रायबरेली की दूसरी छमाही बैठक में महाप्रबंधक, आरेडिका एवं अन्य सदस्य कार्यालय (दिनांक 06.10.2025)

आरेडिका में 'राष्ट्रीय एकता शपथ' एवं 'रन फॉर यूनिटी' का आयोजन (दिनांक 31.10.2025)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायबरेली की बैठक में उप निदेशक (गृह मंत्रालय) एवं समस्त सदस्य कार्यालय के प्रतिनिधि (दिनांक 06.10.2025)

दृष्टिबाधित कार्मिकों के लिए विशेष तकनीकी कार्यशाला का आयोजन (दिनांक 10.12.2025)

डॉ. अम्बेडकर जी के महापरिनिर्वाण दिवस पर महाप्रबंधक महोदय का संबोधन (दिनांक 06.12.2025)

आरेडिका में आयोजित अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता (दिनांक 07.10.2025)

# आरेडिका की झलकियाँ

## आरेडिका की उत्पादन यात्रा में 15,000वां कोच बना मील का पत्थर

रायबरेली। (स्पष्ट आवाज) आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना (आरेडिका) ने रेल कोच निर्माण के क्षेत्र में एक और उल्लेखनीय उपलब्धि दर्ज करते हुए 15,000वें कोच का निर्माण पूरा किया है। यह उपलब्धि 15 दिसंबर 2025 को हासिल की गई, जो न केवल आरेडिका की निरंतर बढ़ती उत्पादन क्षमता को दर्शाती है, बल्कि स्वदेशी रेल विनिर्माण की मजबूत होती बुनियाद का भी प्रमाण है। वर्ष 2011 में स्थापित आरेडिका ने शुरुआती दौर के बाद वर्ष 2014 से कोच निर्माण को नई गति दी। 'मेक इन इंडिया' पहल के अंतर्गत मिले प्रोत्साहन से यहां उत्पादन क्षमता में लगातार विस्तार हुआ। चालू वित्त वर्ष 2025-26 में अब तक 1,310 कोचों का निर्माण किया जा चुका है, जो इस कारखाने की कार्यकुशलता और नियोजित उत्पादन प्रणाली को रेखांकित करता है। आरेडिका में अब तक निर्मित 15,000 कोचों में 7,000 वातानुकूलित तथा 8,000 गैर-वातानुकूलित कोच शामिल हैं। इन कोचों में हमसफर, तेजस, अन्त्योदय, दीनदयालु, भारत गौरव, ब्रेकयान, पार्सल वैन, ट्रैक रिकॉर्डिंग कार, एसी इकोनॉमी कोच, मेमू, डेमू तथा मोज़ाम्बिक के लिए निर्मित विशेष कोच शामिल हैं। सभी कोच निर्धारित गुणवत्ता एवं सुरक्षा मानकों के अनुरूप तैयार किए गए हैं, जिससे यात्रियों को सुरक्षित और आरामदायक यात्रा उपलब्ध कराई जा सके। इस उपलब्धि पर आरेडिका के महाप्रबंधक पी. के. मिश्रा ने कोच निर्माण से जुड़े अधिकारियों, कर्मचारियों और संविदा कर्मियों के योगदान की सराहना करते हुए इसे सामूहिक परिश्रम और अनुशासन का परिणाम बताया। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में आरेडिका उत्पादन और गुणवत्ता के नए मानक स्थापित करता रहेगा।

## हिंदी को बनाएं जन-जन की भाषा

### आरेडिका में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की हुई बैठक

संवाद न्यूज एजेंसी

लालगंज। आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना (आरेडिका) में सोमवार को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की 11वीं अर्द्धवार्षिक बैठक हुई। इसका आयोजन राजभाषा विभाग के सौजन्य से हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आरेडिका के महाप्रबंधक प्रशांत कुमार मिश्र रहे।

गृह मंत्रालय (राजभाषा कार्यान्वयन गाजियाबाद) के उप निदेशक डॉ. छबिल कुमार मेहर विशेष अतिथि के रूप में मौजूद रहे। विशेष अतिथि डॉ. मेहर ने कहा कि सभी को अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी शब्दों का प्रयोग बढ़ाना चाहिए। हिंदी को औपचारिकता से आगे बढ़ाकर जन-जन की भाषा बनाना होगा।

नराकास के सदस्य सचिव योगेश कुमार मिश्र ने बताया कि पिछले छह महीनों में 20 बैठकें और आठ कार्यशालाएं आयोजित की गई हैं। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को सम्मानित किया गया है। इस अवसर पर आयुक्त रमेशचंद्र, आरेडिका के सह प्रधान मुख्य सुरक्षा राकेश रंजन मौजूद रहे।

### आरेडिका में अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता शुरू

लालगंज। आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना (आरेडिका) में मंगलवार को रेलवे बोर्ड के तत्वावधान में अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिताओं का शुभारंभ हुआ। इसमें देशभर से पहुंचे कर्मचारियों ने प्रतिभाग किया। यह प्रतियोगिता सात से नौ अक्टूबर तक आयोजित की जा रही है। आरेडिका के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी आरएन तिवारी ने बताया कि रेल कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए प्रतियोगिता का आयोजन हो रहा है। पहले दिन हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। नौ अक्टूबर को विजेताओं के नाम की घोषणा और पुरस्कार वितरण समारोह होगा। इस मौके पर रमेश चंद्र, सतविंदर सिंह, जितेंद्र कुमार झा व राजभाषा अधिकारी राकेश रंजन मौजूद रहे। (संवाद)

### हिंदी पखवाड़े में 50 प्रतिभागी पुरस्कृत

रायबरेली। एम्स में हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह हुआ। समिति के अध्यक्ष डॉ. प्रबल जोशी ने अपने अनुभवों का साझा किया। काव्य-पाठ, निबंध, भाषण, वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रतियोगिता व ओपेन क्विज आदि प्रतियोगिताओं में संस्थान के कर्मचारी व छात्र-छात्राएं शामिल हुए। 50 से अधिक प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यकारी निदेशक डॉ. अमिता जैन ने हिंदी के महत्व व उसके संपर्क भाषा के रूप में योगदान के बारे में बताया। संस्थान के प्रशासनिक अधिकारी केबीवाई सिंह के धन्यवाद प्रस्ताव के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम में डीन (अकादमिक) डॉ. नीरज कुमारी, वित्तीय सलाहकार कर्नल यूएन राय, अपर चिकित्सा अधीक्षक डॉ. नीरज कुमार श्रीवास्तव सहित संकाय सदस्य, अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। (संवाद)

## आरेडिका में दृष्टिबाधित कार्मिकों के लिए विशेष तकनीकी कार्यशाला

रायबरेली, 11 दिसम्बर। महाप्रबंधक श्री प्रशांत कुमार मिश्रा के संरक्षण एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी सह प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त तथा प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी के संयुक्त मार्गदर्शन में आरेडिका के राजभाषा विभाग द्वारा दृष्टिबाधित कर्मचारियों के लिए विशेष तकनीकी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

यह आयोजन दृष्टिबाधित कार्मिकों के कार्यकुशलता में वृद्धि एवं उनकी क्षमताओं का सही दिशा में उपयोग सुनिश्चित करने का एक प्रयास था।

प्रशिक्षक के रूप में नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड दिल्ली से हरेंद्र कुमार और शुभम कुमार ने दृष्टिबाधित कर्मचारियों के लिए उपयोगी तकनीकी सॉफ्टवेयर जैसे चैट जीपीटी, जैमिनी, रेलवे के आंतरिक सॉफ्टवेयर ई-ऑफिस प्रणाली और दैनिक प्रशासनिक कार्यों को कुशलतापूर्वक संभालने के लिए आवश्यक कंप्यूटर अनुप्रयोगों का उपयोग करना सिखाया गया। प्रशिक्षण केवल सैद्धांतिक नहीं था बल्कि इसमें वास्तविक समय के कार्यालय परिदृश्यों पर व्यावहारिक अभ्यास शामिल थे ताकि कर्मचारी अपने कार्यक्षेत्र में इन उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकें।

इस कार्यशाला में हरे कृष्णा योगी, उपासना अवस्थी, अम्बुज कुमार सिंह, सुबोध गांधी, गोवर्धन गौर, सौरव कुमार, राजेश पाल आदि ने सहभागिता की। कार्यक्रम राजभाषा अधिकारी राकेश रंजन के कुशल दिशानिर्देशन में संपन्न हुआ।

## आरेडिका में तीन दिवसीय अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिताओं का भव्य समापन

रायबरेली। (स्पष्ट आवाज) रेल कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में दक्ष बनाने और आधिकारिक कार्यों में इसे प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयोजित तीन दिवसीय अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिताएं आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली में सफलतापूर्वक संपन्न हुईं। यह प्रतियोगिता 07 अक्टूबर से 09 अक्टूबर तक आयोजित रही, जिसमें निबंध लेखन, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन और वाक प्रतियोगिता के माध्यम से प्रतिभाओं का चयन किया गया। प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण एवं सांस्कृतिक समारोह में आरेडिका महाप्रबंधक प्रशांत कुमार मिश्रा, आरेडिका महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा भारती मिश्रा, रेलवे बोर्ड के निदेशक राजभाषा बी. सगुणा, उप निदेशक राजभाषा सतविंदर सिंह, सहायक निदेशक अंजू गेरा और आरेडिका के महानिरीक्षक सह प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी रमेश चंद्र प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। अखिल रेल हिंदी निबंध लेखन में मनाली देव शर्मा (जेई सिग्नल, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे मालीगांव) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, संजय ठाकुर (कार्यालय अधीक्षक, पूर्व मध्य रेलवे समस्तीपुर) द्वितीय रहे, जबकि स्वाति मिश्रा (सहायक लोको पायलट, उत्तर मध्य रेलवे कानपुर) ने तृतीय स्थान अर्जित किया। टिप्पण एवं प्रारूप लेखन में सर्वेन्दु हलदार (मुख्य विधि सहायक, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे कटिहार) ने प्रथम, गौरी शंकर सिंह (एसएसई विद्युत, बनारस रेल इंजन कारखाना, वाराणसी) द्वितीय और विनय कुमार झा (वाणिज्य निरीक्षक, उत्तर पश्चिम रेलवे बीकानेर) तृतीय स्थान प्राप्त किया। वाक प्रतियोगिता में अंकित कुमार उपाध्याय (सीएमए, उत्तर रेलवे लखनऊ) ने प्रथम, धनविंदर कौर (वरिष्ठ इंजीनियर/आईटी, रेल डिब्बा कारखाना कपूरथला) द्वितीय और आर. मणिपसकरसी (कार्यालय अधीक्षक, सवारी डिब्बा कारखाना चेन्नई) तृतीय स्थान हासिल किया। महाप्रबंधक प्रशांत कुमार मिश्रा ने अपने संबोधन में कहा कि रेल और राजभाषा दोनों ने देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है और रेल कर्मियों का इस क्षेत्र में अतुलनीय योगदान सराहनीय है। उन्होंने रेलवे बोर्ड को अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता को आरेडिका में आयोजित कराने के लिए धन्यवाद दिया। निदेशक राजभाषा बी. सगुणा ने आरेडिका को प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए बधाई दी और कहा कि राष्ट्रीय स्तर की रेलवे राजभाषा प्रतियोगिताओं के आयोजन में भविष्य में आरेडिका का मंच और सहयोग सुनिश्चित किया जाएगा। समारोह के दौरान आरेडिका के सांस्कृतिक संगठन और स्काउट गाइड के बच्चों ने समूह और एकल नृत्य प्रस्तुत किए, जबकि विभिन्न रेलवे से आए प्रतिभागियों ने अपनी कला और रचनाओं से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उप मुख्य राजभाषा अधिकारी अष्टानन्द पाठक ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा भारती मिश्रा, सभी सदस्य, प्रधान मुख्य यांत्रिक अभियंता विवेक खरे, प्रधान वित्त सलाहकार बाली लाल मीणा, प्रधान मुख्य विद्युत अभियंता मनोज कुमार जिंदल, प्रधान मुख्य चिकित्सा अधिकारी आभा जैन, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक अकमल खान, राजभाषा अधिकारी राकेश रंजन, अधिकारी एवं कर्मचारीगण और रेलवे संगठन के प्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।

# मोहन राकेश

**जन्म :**
**8 जनवरी, 1925**
**जंडीवाली गली, अमृतसर**

**निर्वाण :**
**3 दिसंबर, 1972**
**नई दिल्ली**

**शिक्षा :** संस्कृत में शास्त्री, अंग्रेजी में बी.ए., संस्कृत और हिन्दी में एम.ए.।

**आजीविका :** लाहौर, मुम्बई, शिमला, जालंधर और दिल्ली में अध्यापन, सम्पादन और स्वतंत्र लेखन।

महत्त्वपूर्ण कथाकार होने के साथ-साथ एक अप्रतिम और लोकप्रिय नाट्य-लेखक। नितान्त असम्भव और बेहद ईमानदार आदमी।

**प्रकाशित पुस्तकें :** अँधेरे बन्द कमरे, अन्तराल, न आनेवाला कल (उपन्यास); आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे, पैर तले की ज़मीन (नाटक); शाकुन्तल, मृच्छकटिक (अनूदित नाटक); अंडे के छिलके, अन्य एकांकी तथा बीज नाटक, रात बीतने तक तथा अन्य ध्वनि नाटक (एकांकी); क्वार्टर, पहचान, वारिस, एक घटना (कहानी-संग्रह); बक़लम खुद, परिवेश (निबन्ध); आखिरी चट्टान तक (यात्रावृत्त); एकत्र (अप्रकाशित-असंकलित रचनाएँ) तथा बिना हाड़-मांस के आदमी (बालोपयोगी कहानी-संग्रह)।

**सम्मान :** सर्वश्रेष्ठ नाटक और सर्वश्रेष्ठ नाटककार के संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, नेहरू फैलोशिप, फ़िल्म वित्त निगम का निदेशकत्व, फ़िल्म सेंसर बोर्ड के सदस्य।


| संरक्षक | मुख्य सम्पादक | उप मुख्य सम्पादक | सम्पादक |
|---|---|---|---|
| श्री प्रशांत कुमार मिश्रा | श्री रमेश चन्द्र | श्री अष्टानन्द पाठक | श्री राकेश रंजन |
| महाप्रबन्धक | मुख्य राजभाषा अधिकारी | उप मुख्य राजभाषा अधिकारी | राजभाषा अधिकारी |